श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 | अंक : 4 | अप्रैल 2020 | मूल्य : 20 रु.

धनावंशी सुरीले गायक-राजकुमार स्वामी

धनावंशी विशिष्टजनों के विचार

प्रार्थना का महत्त्व

भक्त धनाजी महाराज

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

स्व. हनुमानदाजी बुगालिया
एवं श्रीमती मनोहरीदेवी
बुगालिया का शुभाषीष

भागीरथदास स्वामी
M.: 9310045994

प्रेमदास स्वामी
M.: 9873345994

रामचन्द्र स्वामी
M.: 9811844777

सांवरमल स्वामी
M.: 9350822501

Cotton Line Fashion
Gandhinagar, Delhi

Life Time Fashion
Gandhinagar, Delhi

Rajdhani Sales
Gandhinagar, Delhi

S.M. Garments
Karawal Nagar, Delhi

गांव सारंगसर, पोस्ट लुहारा, तहसील-बीदासर (चूरू) राज.

पावन सन्निधि
श्री ठाकुरजी महाराज
भक्त शिरोमणि श्री धनाजी

मानद परामर्श
परिव्राजक श्रीसीतारामदास स्वामी

सम्पादक एवं प्रकाशक
चेतन स्वामी

सहायक सम्पादक
प्रशांत कुमार स्वामी, फतेहपुर
श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़
(अवैतनिक)

अकाउंट विवरण
Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

सम्पादकीय कार्यालय
श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन, कालूबास,
श्रीडूंगरगढ़-331803
(बीकानेर) राज.
M.: 9461037562
email:chetanswami57@gmail.com

सम्पादक प्रकाशक
चेतन स्वामी द्वारा प्रकाशित
तथा महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़
से मुद्रित।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं। उनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता व वैधता का दायित्व स्वयं लेखक का है, विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ रहेगा।

मूल्य : एक प्रति 20/- रु.
वार्षिक 200/- रु.

श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 4 अप्रैल 2020 मूल्य : 20/- रुपये

गते शोको न कर्तव्यो, भविष्यं नैव चिन्तयेत्।
वर्तमानेन कालेन, वर्तयन्ति विचक्षणा:।।

जो गया सो गया, उसका दु:ख मानकर नहीं बैठा रहना चाहिए। आगे भविष्य में क्या होने वाला है उसकी भी व्यर्थ चिन्ता नहीं करनी चाहिए। बुद्धिमान लोग तो वर्तमान का विचार कर व्यवहार करते हैं।

अनुक्रमणिका

* सम्पादकीय-

धनावंश को जरुरत आध्यात्मिक पुरुष की/04

* समाचार-/05-06
* आलेख-

बेहद सुरीले गायक है राजकुमार स्वामी/07

प्रार्थना का महत्त्व/08

भक्त धनाजी/10

* अध्यात्म-

आध्यात्मिक सामाजिक बातें जाने/12

* विशद परिचर्चा

धनावंश के महत्त्वपूर्ण प्रश्न/13

* आपके पत्र आपकी भावनाएं/28

सम्पादकीय

धनावंश को जरुरत आध्यात्मिक पुरुष की

धनावंश की आध्यात्मिक उन्नति और समाज की प्रगतिगामी चेतना का आधार हमारा यह विश्वास ही उपयोगी हो सकता है कि हम सब धनावंशी हमारे धर्म और पंथ गुरुजी धनाजी के अनुयायी हैं । जो इस बात से हट कर कुछ सोचता है। मेरी राय में वह कभी भक्ति साहित्य नहीं पढता । उसकी भक्ति काल में उत्पन्न हुए धार्मिक पंथों के बारे में शून्य जानकारी है । धार्मिकता के संस्कारों के लोप होते जाने के कारण ही हमारे बतीस धनावंशी महंत द्वारे मिट गए अथवा बंद जैसे हो गए । इसे घोर दुर्भाग्य जानना चाहिए कि महंत द्वारों में हमारे पंथ से सम्बन्धित सारी तथ्यात्मक जानकारियां और साहित्य मिलना चाहिए था । जो तीन द्वारे अभी खुले हैं, वहां भी कोई सामग्री नहीं है। ऐसा अज्ञानता का खेल केवल धनावंश में ही चल सकता। धर्म, अध्यात्म और पंथ की सच्ची सच्ची बात नहीं जाने, तो फिर वह महंत ऐसी बातें कब जानेगा ? हमारे मौजूदा महंतों में अपने पंथ के बारे में जानने या खोज करने की कोई दिलचस्पी भी नहीं है । ऐसी खराब स्थिति से गुजर रहा है, हमारा पंथ। जब इसके अग्रणी लोगों में धार्मिक भाव नहीं है, तो यह किस प्रकार का धार्मिक सम्प्रदाय है ? गंभीरता से सोचने की बात है कि दूसरे धार्मिक सम्प्रदाय हमारी बात तभी सुनेंगे, जब हम अपने पंथ के सम्बन्ध में विद्वतापूर्ण बात करें। अनपढ और जाहिल लोगों को कोई अपने पास नहीं बैठाता । हमने आज तक कोई बड़ा धार्मिक सम्मेलन इसलिए नहीं किया क्योंकि पंथ सम्प्रदाय के सम्बन्ध में बुद्धिमतापूर्ण ढंग से बात कहनेवाला हमारे पास न सामाजिकों में और न ही महंतों में कोई एक भी व्यक्ति है । ऐसे कब तक चलेगा ? खाली रुपये के मद या थोथे अहंकार से समाज आगे कैसे बढेगा ? किसी भी समाज में सब लोग अपने समाज के ज्वलंत प्रश्नों पर विचार करनेवाले नहीं होते, पर कुछ लोग तो होने चाहिए न? भाइयों ईमानदारी से इन बातों पर विचार कीजिए ।

कृपाकांक्षी
चेतन स्वामी

अनुरोध

पान मसाला/गुटका मुक्त धनावंश

प्रिय धनावंशी बंधुओं
जरा गौर करें ।

समाज में व्याप्त एक-एक बुराई को प्रयत्न पूर्वक समाप्त किया जा सकता है । इस काम को ठाकुर जी का काम समझकर करने की पहल करनी चाहिए । आप जहां रहते हैं,वहां यह देखें कि कौन धनावंशी भाई बहिन इस व्यसन से ग्रसित हैं । उनके पास जाएं,उन्हें प्रेम पूर्वक समझाएं कि इसमें भरपूर मात्रा में डला हुआ मैग्नेशियम कार्बोनेट आपको चिड़चिड़ा, झुंझलाया हुआ बना रहा है ।आपको भीतर से कमजोर बना रहा है । गर्मी अधिक लगती है । भूख कम लगती है । मुंह का स्वाद खो गया है । कोई अच्छी चीज खाने की इच्छा नहीं होती । यह आपको टेकी कार्डिया की ओर ले जा रहा है । तेजी से मृत्यु की ओर ले जा रहा है । मुंह की फ्लैक्सिब्लिटी खत्म हो रही है । आधा ही मुंह खुल रहा है । मुंह में हर समय एक कसैली बदबू बनी रहती है जैसे मुंह न हुआ कचरे का गंधाता हुआ डिब्बा है । आप की बदबू के कारण कोई भलामानुष आपके पास नहीं बैठना चाहता । हर समय पचर पचर थूकते रहने के कारण आप बड़े असभ्य लगते हैं । भोजन को पचाने में काम आनेवाली लार को बाहर थूकने से आप अपने एंजाइम को व्यर्थ कर रहे हैं । यानि सब कुछ आपके लिए बड़ा ही खराब है । इससे आप तेजी से कैंसर की ओर बढ रहे हैं । जितना जल्दी हो सकता है,इसे छोड़िए । आप अगर दो लोगों को भी गुटका छुड़वाते हैं तो आपको बड़ा भारी पुण्य प्राप्त होगा ।

वक्त निकल जाने के बाद कद्र की जाये, उसे कद्र नहीं अफसोस कहते है।

समाचार

साहित्यिक सेवाओं के लिए डा. शैलेन्द्र स्वामी सम्मानित

जोधपुर। रामस्नेही संत काव्य में उल्लेखनीय शोधपरक साहित्यिक सेवाओं के लिए जोधपुर निवासी डा. शैलेन्द्र स्वामी (धनावंशी) को अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा (भीलवाड़ा) के पीठाधीश्वर स्वामी रामदयालजी ने 21 हजार रुपये की नगद राशि, श्रीफल व माला पहनाकर स्वागत किया। शाहपुरा में सात दिवसीय श्रीरामचरण प्राकट्य त्रिशताब्दी महोत्सव के दौरान उन्हें सम्मानित किया गया।

शिक्षा निदेशक बनने पर सौरभ स्वामी का हुआ सम्मान

बीकानेर। धनावंशी स्वामी आईएएस सौरभ स्वामी को गत दिनों माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर में निदेशक पद पर लगाये जाने पर धनावंशी स्वामी समाज के बंधुओं ने श्रीगंगानगर एवं बीकानेर में उनका भावभीना स्वागत किया। गणमान्यजनों ने श्री सौरभ स्वामी को फूल-मालाएं पहनाकर सम्मान प्रतीक भेंट कर व शॉल ओढाकर सम्मानित किया। श्री सौरभ स्वामी समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में अपना मूल्यवान समय प्रदान करते है। उल्लेखनीय है कि श्री सौरभ स्वामी के पिता का नाम श्री अशोकजी स्वामी है तथा वे हरियाणा के दादरी कस्बे के मूल निवासी है।

आसोप सीताराम मंदिर के महंत गादी पर गुलाबदास उत्तराधिकारी नियुक्त

भोपालगढ़। तहसील के आसोप ग्राम में नये महंतजी गुलाबदासजी को महंतीय चादर सौंपते हुए सीताराम मंदिर का महंत मनोनीत किया गया। उल्लेखनीय है कि सम्वत् 2000 से 2076 तक महंत रहे परशरामदासजी का माघ बदी चतुर्थी को देवलोकगमन हो गया था। माघ सुदी 6 अर्थात् 31 जनवरी को महंत नियुक्ति के लिये क्षेत्र के सभी धनावंशी स्वामियों को इकट्ठा किया गया और उत्तराधिकारी स्वरूप श्री गुलाबदासजी को चादर प्रदान की गई। इससे पूर्व यहाँ मुकन्ददास, तोलदास तथा परशरामदास महंत हो चुके है।

गारबदेसर में महंत हरिदासजी महाराज दादोजी की 184वीं पुण्यतिथि मनाई गई

गारबदेसर। 5 फरवरी को गारबदेसर गांव में स्थित गारबदेसर गद्दी के महंत श्री हरिदास महाराज की जीवित समाधि पर 184वीं पुण्यतिथि भक्तिभाव पूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर बहुत दूर-दूर से धनावंशी स्वामी स्त्री, पुरुष, आबाल, वृद्ध उपस्थित हुए तथा रात्रि जागरण एवं अगले दिन भण्डारे का आनन्द लिया। 4 फरवरी को यहां अखण्ड रामचरितमानस पाठ हुआ। 5 फरवरी की रात्रि को जागरण में अनेक कलाकारों ने अपने सांगीतिक प्रस्तुतियां दी। 6 फरवरी को प्रात: 10.15 बजे हवन हुआ। यह सारे कार्य वर्तमान महंत मोहनदासजी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुए। इस अवसर पर इस महंतद्वारे को और विकसित करने पर भी स्वजनों ने विचार किया।

ध्यान रहे हमेशा रूठी हुई खामाशियों से बोलती हुई शिकायतें बेहतर होती है।

समाचार

चतरदासजी मंदिर में शिव परिवार की स्थापना

श्रीडूंगरगढ़। कालू बास के प्राचीन श्री राधाकृष्ण मंदिर जिसे धनावंशी स्वामी श्री चतरदासजी का मंदिर भी कहा जाता है, में शिव पार्वती परिवार की मूर्तियों की स्थापना धूमधाम से की गई। प्रथम दिन मौहल्ले में मूर्तियों की शोभायात्रा निकाली गई। प्राण-प्रतिष्ठा के मुख्य आचार्य पं. इन्द्रचन्द जोशी थे। प्राण-प्रतिष्ठा के दौरान सवा लाख महामृत्युञ्जय पाठ भी हुआ। शिव परिवार की मूर्तियों की प्रस्थापना पर एवं मुख्य यजमान कालू बास के जगदीशप्रसाद मूंधड़ा तथा उसके परिवारजन थे। मूर्ति प्रस्थापना के अगले दिन भण्डारा हुआ। मंदिर के पुजारी घनश्यामदास ने बताया कि मंदिर प्रांगण में प्रतिदिन संध्या को परिव्राजक संत श्री सीतारामदासजी ने अपनी मधुर वाणी में नरसी मायरा सुनाया।

सोल्लास सम्पन्न धनावंशी होली स्नेह मिलन समारोह

सूरत। शहर में धनावंशी स्वामी समाज ने 29 फरवरी को आठवां होली स्नेह मिलन समारोह धूमधाम से मनाया। धनावंशी स्वामी समाज के प्रचार मंत्री पवन पूनिया के अनुसार कार्यक्रम में बड़ी संख्या में धनावंशी स्त्री, पुरुष और बालकों ने भाग लिया। कार्यक्रम को विशेष

अतिथि रतनगढ़ के विधायक अभिनेष महर्षि ने सम्बोधित किया। विशेष अतिथि के रूप में रातुसर पंचायत के सरपंच पति गिरधारीलाल स्वामी, गारबदेसर के सरपंच गणपतदास थालौड़, मुम्बई में कस्टम ऑफिसर घनश्याम स्वामी, वापी से चन्द्रशेखर डोडवालिया, नानूदास चोयल, सुरेश घिंटाला, जगदीश स्वामी, मनोज स्वामी, गांधीधाम से भागीरथ चोयल उपस्थित हुए वहीं सूरत के सभी समाज बंधुओं ने कार्यक्रम का आनन्द लिया।

होली का धमाल और चंग का लुत्फ उठाया। छोटे बच्चों ने अपने गीत-नृत्य प्रस्तुत किये। इस अवसर पर देवीदत्त स्वामी ने उपस्थित धनावंशी समाज को यह संकल्प करवाया कि आज के बाद हम चाहे कहीं भी भोजन करे थाली में भोजन को जूठा नहीं छोड़ेंगे। भोजन ठाकुरजी का प्रसाद होता है। हम उसका अपमान नहीं होने देंगे। समारोह में धनावंश स्वामी समाज सूरत के अध्यक्ष रामनिवास पूनिया ने सबका स्वागत किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सूरत कार्यकारिणी के सभी अग्रणीय कार्यकर्ताओं ने तन-मन-धन से सहयोग दिया। कार्यकारिणी के दयालप्रसाद घासल सुजानगढ़, जगदीश मूण्ड कल्याणसर, अरविन्द पूनिया, पवन पूनिया राजगढ़, रामचन्द्र रातुसर, रायसिंह श्यामोता पाण्डुसर, विकास स्वामी गारबदेसर, दामोदर भाम्बू छापर, रामदास सारंगसर, बृजदास भूकर गुसांईसर ने सम्पूर्ण सहयोग दिया।

क्षमता और ज्ञान को हमेशा अपना गुरु बनाओ, अपना गुरूर नहीं।

बेहद सुरीले गायक है

राजकुमार स्वामी

महीन आवाज के धनी राजकुमार को पसंद किया जाने लगा। जब वे सोलह-सत्रह वर्ष के हुए, तब तक तो उनके ऑडियो कैसेट ही बाजार में आ गए और बड़ी तेजी से वे लोकप्रियता की सीमा उलांघने लगे।

धनावंशी स्वामी समाज के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि हमारे पास राजकुमार स्वामी जैसे सुमधुर गायक हैं। राजकुमार स्वामी का जन्म सुजानगढ़ तहसील के गांव आबसर में 1 जनवरी 1976 को हुआ। मात्र दस वर्ष की उम्रमें ही ये गायकी से जुड़ गए। राजस्थान के आधुनिक गायकों में राजकुमार वे सौभाग्यशाली गायक हैं जिनके लोकभजन और लोकगीत गली-गली में गूंजते रहे हैं तथा अपार लोकप्रियता हासिल की। हर शहर के मंदिरों में आपके भजन नित्य सुबह शाम बजते रहे।

उनकी गायकी की शुरुआत अपने गांव आबसर की खेमदास स्वामी की ढाणी में हुए जागरण से हुई। इस समय ये लगभग 10 वर्ष के बालक थे। वाटरवर्क्स के ठेकेदार रामस्वरुप उनके पहले गुरु बने। रामस्वरुप जागरणों में गाया करते थे। बालक राजकुमार को भी साथ ले जाने लगे। महीन आवाज के धनी राजकुमार को पसंद किया जाने लगा। जब वे सोलह-सत्रह वर्ष के हुए, तब तक तो उनके ऑडियो कैसेट ही बाजार में आ गए और बड़ी तेजी से वे लोकप्रियता की सीमा उलांघने लगे। वे जागरणों में गाते और उस समय दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, रोहतक की जो कैसिट कम्पनियां थी, उनकी वे पहली पसंद थे। हर कैसिट कम्पनी बहुतायात में इन्हें रिकॉर्ड कर रही थी।

पहले पहल ही सीरीज से श्यामलीला तथा बालाजी दिलदार नाम के दो कैसिट जारी हुए और दोनों कैसेट राजस्थान और राजस्थान से बाहर भी खूब पसंद किये गए। पचीस-तीस वर्षों के अंतराल में ही उनके एक हजार से अधिक कैसिट मार्केट में आ गए। सभी प्रसिद्ध रिकॉर्डिंग कम्पनियों की वे पहली पसंद थे।

राजस्थान के भजन गायक मोहनुद्दीन मनचला, प्रकाश माली, महेन्द्र पंवार, कुशल बारठ, श्याम पालीवाल, किशोर सेन आदि के बीच वे वरिष्ठ हैं और अपनी अनोखी गायकी के कारण उनकी एक अलग पहचान है। वैष्णव गायक-गायिकाओं में भी ये सिरमौर हैं। राजकुमार स्वामी अपनी गायकी के अलग अंदाज को ईश्वर प्रदत्त नैसर्गिक कला मानते हैं। उनका सौभाग्य है कि तीस-पैंतीस वर्षों से लोग उन्हें आज भी चाव से सुनते हैं-सराहते हैं। भजन गायकी उन्हें अधिक पसंद है।

राजकुमारजी वर्तमान में सुजानगढ़ में निवास करते हैं तथा वहीं से आर. के. एस. नाम से यूट्यूब चैनल के माध्यम से अपने भजन-गायन देश-विदेश में पहुंचाते हैं। वे बताते हैं कि ऑडियो कैसेट बंद होने से उन्हें एक बार जरुर थोड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा क्योंकि उनके वे कैसेट घर-घर पहुंचकर उन्हें लोकप्रियता दे रहे थे। वे कभी महीने के तीसों दिन जागरणों में व्यस्त रहा करते थे, आज उतना तो नहीं, फिर भी उनकी मांग कम नहीं हुई है। वे न केवल राजस्थान बल्कि सभी राज्यों में अपनी प्रस्तुतियां देने जाते हैं। अपने पंथ धनावंश से उन्हें अटूट प्यार है। धनावंशी भाइयों ने उनकी कला को सराहा तथा आगे बढ़ाया। उनके खानदान में गायकी के पेशे से एकमात्र वे ही जुड़े हुए हैं। वे सभी देवी-देवताओं के प्रति नतमस्तक रहते हैं-सांगलिया धूणा के प्रति उनकी गहरी आस्था है। सांगलपति ओमदासजी महराज को गुरुभाव से श्रद्धा देते हैं।

राजकुमार स्वामी (मो.: 9414422912) • **मांगीलाल स्वामी, सुजानगढ़**

मन्दिर तक पहुँचना तन का विषय है, लेकिन ईश्वर तक पहुँचना मन का विषय है।

प्रार्थना का महत्त्व

वर्तमान समय में देखा गया है कि मनुष्यों के जिन समुदायों में निश्चित प्रार्थना निश्चित समय और निश्चित स्थान पर होती है, ऐसे समुदायों को तोड़ने के लिए बड़ी-बड़ी प्रबल शक्तियां जुटी, परंतु उन्हें भिन्न करने में असमर्थ सिद्ध हुई है।

सं गच्छध्वम्, सं वद्ध्वम्,
सं वो मनांसि जानताम्।

प्रार्थना से बुद्धि शुद्ध होती है। देवताओं की प्रार्थना से दैवीशक्ति प्राप्त होती है। द्रौपदी की प्रार्थना से सूर्य भगवान ने दिव्य बटलोई दी थी। नल-नील को प्रार्थना से पत्थर तैराने की शक्ति प्राप्त हुई थी। महात्मा तुलसीदासजी को श्री पवनसुत हनुमानजी से प्रार्थना करने पर भगवान राम के दर्शन हुए, भगवान से प्रार्थना करने पर डाकू रत्नाकर की बुद्धि अत्यंत शुद्ध हो गई। वे वाल्मीकी ऋषि के नाम से प्रसिद्ध हुए और मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने उनको साष्टाङ्ग दण्डवत प्रणाम किया। वर्तमान समय में भी प्रार्थना से लाभ उठानेवाले बहुत लोग हो चुके हैं और अब भी हैं।

प्रार्थना करने से शारीरिक क्लेशों का भी शमन होता है। प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदासजी की बाँह में असहनीय पीड़ा हो रही थी, श्री हनुमानजी से प्रार्थना करने पर अर्थात् उन्हें हनुमान बाहुक सुनाते ही सारी पीड़ा शान्त हो गई। प्रार्थना से कामना की पूर्ति होती है। राजा मनु की प्रार्थना पर भगवान ने उनके गृह में जन्म लेने की स्वीकृति दी। सत्यनारायण की कथा में लिखा है कि दरिद्र लकड़हारे की प्रार्थना पर भगवान ने उसे सम्पत्तिशाली बना दिया। प्रार्थना के द्वारा मुनष्यों में परस्पर प्रेम उत्पन्न होता है। प्रार्थना एकता के लिए सुदृढ़ सूत्र है। ईंट के टुकड़ों तथा बालू से मन्दिर बनाना असम्भव सा है। पर यदि उसमें सीमेंट मिला दी जाये तो सभी बालू के कण एवं ईंटे एक शिला के समाज जुड़ जाती है। वर्तमान समय में देखा गया है कि मनुष्यों के जिन समुदायों में निश्चित प्रार्थना निश्चित समय और निश्चित स्थान पर होती है, ऐसे समुदायों को तोड़ने के लिए बड़ी-बड़ी प्रबल शक्तियां जुटी, परंतु उन्हें भिन्न करने में असमर्थ सिद्ध हुई है। वर्तमान युग में भी ऐसी घटनाएं हो चुकी है, प्राचीन काल में हुई हैं।

एक समय.....बड़ी सभाओं में देख पड़ती है। किसी महापुरुष के देहावसान हो जाने पर दो-चार मिनट मृतात्मा

जीवन की सबसे बड़ी गलती वही होती है,
जिस गलती से हम कुछ भी सीख नहीं पाते है।

की शान्ति के लिए सभाओं में सामूहिक प्रार्थना की जाती है। प्रार्थना के उपासक महात्मा गांधी, महामना मालवीयजी आदि धार्मिक-राजनीतिक नेताओं का अधिक स्वास्थ्य बिड़ने पर जब-जब समाज में प्रार्थना की गई, तब तब लाभ प्रतीत हुआ। और भी अनेक उदाहरण है। प्रार्थना में विश्वास की प्रधानता है। प्रार्थना हृदय से होनी चाहिए। निरन्तर, आदरपूर्वक, दीर्घकाल तक होने से वह सफल होती है।

दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढ़भूमि:

इष्टदेव को सुनाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जनको सुनाने की दृष्टि से नहीं। प्रार्थना से आस्तिकता बढ़ती है। आस्तिकता से मनुष्यों की पाप में प्रवृत्ति नहीं होती। दुराचार के नाश और सदाचार की वृद्धि से समाज में दरिद्रता, कलह, शारीरिक रोग, चरित्र-पतन की निवृत्ति होकर परस्पर प्रेम, आरोग्य, सुख-सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

ईसाई, मुसलमान, पारसी आदि समुदायों में प्रार्थना का प्रमुख स्थान है। वे किसी भी दल में हो, किसी भी देश या स्थान में हो, उन लोगों की प्रार्थना एक है। यही कारण है कि वे धार्मिक सूत्र में आबद्ध होने के कारण सुव्यवस्थित है। हमारे यहां त्रिकाल संध्या का नियम था।

संध्या एन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता।
स शूद्रवद् बहिष्कार्य: सर्वसाद् द्विजकर्मण:।।

लगातार तीन दिनों तक संध्या न करने वाला अपने वर्ण से च्युत कर दिया जाता था। परंतु आजकल दो प्रतिशत द्विजाति भी संध्या नहीं करते, कितने खेद का विषय है। संध्या कामधेनु, गौ है, तो प्रार्थना उसकी बछिया है। यदि गौ कहीं चली जाये और आप बछिया को ही अपने पास बाँध ले तो भी इधर-उधर घूमकर उस स्थान पर आ जायेगी। स्वार्थ के कारण विघटित हुए समाज के अनेक दल-रुपी सुमनों को संगठित बनाने के लिए प्रार्थना एकसूत्र है। अतएव समाज को सुव्यस्थित बनाने के लिए प्रार्थना को मुख्य स्थान देना ही चाहिए। प्रार्थना की महिमा का कहाँ तक वर्णन किया जाये।-

सब पर्वत स्याही करूँ, घोलूँ सागर माहिं।

कविता मृत्यु भोज

• रघुनाथप्रसाद स्वामी, डीडवाना

जिस आंगन में शोक से बिलख रही माता।
वहां पहुंचकर स्वाभ जीभ का तुमको कैसे भाता?
पति वियोग में व्याकुल मनुवती विधवा रोती।
बड़े चाव से पंगत खाते जरा पीड़ न होती?
मरने वालों के प्रति जरा सद्व्यवहार निभाओ।
धर्म यही कहता बंधुओं मृतक भोज मत खाओ।
चला गया संसार छोड़कर जिसका पालनहार।
पड़ा चेतनाहीन जहां पर सारा ही परिवार।।
खुद भूले रहकर भी परिजन तेरहवीं खिलाते हैं।
अंधी परम्परा के पीछे हम जीते जी मर जाते हैं।।
इस कुरीति के उन्मूलन का साहस कर दिखलाओ।
सच्चा धर्म यही कहता है बंदो मृत्युभोज मत खाओ।।

धनावंशी स्वामियों के आराध्य और सदैव पूजनीय तथा निश्चल भक्ति की प्रेरणा देनेवाले प्रात: स्मरणीय धनाजी महाराज के श्री चरणों में सदैव विनती--हे भक्त शिरोमणि सब धनावंशियों में भक्ति के संस्कार भर दो। धनावंशी स्वामी की मूल पहचान क्या है?

- वह विनम्र, संयमी, चरित्रवान और सच्चा तथा संस्कारी हो।
- सदैव भक्ति के भावों से अनुप्राणित होकर, प्रभु भक्ति में लीन रहे।
- किसी भी प्रकार का व्यसन न हो।
- जीवन में सरलता और सादगी हो,दिखावे से कोसों दूर हो।
- मिथ्याचारी न हो।

हर धनावंशी उपरोक्त गुणों से संवलित होना चाहिए।

उम्र से सम्मान जरुर मिलता है, पर आदर तो आपको हमेशा आपके व्यवहार से ही मिलेगा।

भक्त धनाजी

• भँवरलाल नाहटा

धना ने अपने खेत में निपजे हुए तूम्बे लाकर एक-एक सबको दिये। तूम्बे बड़े सुन्दर थे, परन्तु भारी भी बहुत थे। इसलिए उनको फोड़ा गया तो पता चला कि वे गेहूं से भरे हुए थे।

भारत की सबसे बड़ी विशेषता आध्यात्मिकता है। आत्मा और परमात्मा की चर्चा जितनी विशद और विस्तृत रूप से भारत में हुई है। अन्यत्र किसी भी देश में नहीं हुई। भारतीय साधना का प्रधान लक्ष्य रहा है। आत्म साक्षात्कार और भगवत स्वरूप की प्राप्ति। इसलिए भक्ति और ज्ञान तथा कर्म एवं योग को लेकर अनेक ग्रन्थ लिखे गये और कई सम्प्रदाय प्रवर्तित हुए। धनावंश भी उन्हीं सम्प्रदायों में से एक है। भक्ति वास्तव में ही भारतीय मनीषियों की एक विशिष्ट देन है। इससे भगवान के साथ अपना सम्बन्ध बहुत ही सहज रूप में जोड़ा जा सकता है। इसलिए मध्यकाल में भक्ति का सबसे अधिक प्रचार रहा। असंख्य भक्त हुए और उन्होंने अपनी भगवन्निष्ठा द्वारा कई चमत्कार दिखाये। उनके सम्बन्ध में काफी साहित्य प्राप्त होता है। भक्तमाल आदि अनेक ग्रन्थ भक्तों की महिमा के सम्बन्ध में लिखे गये हैं। स्वतन्त्र चरित्र के रूप में सन्तों और भक्तों सम्बन्धी बहुत सी परिचयां भी 27वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक लिखी जाती रही है। परची, परचयी का अर्थ है-परिचय देना। 17वीं शताब्दी के कवि अनन्तदास ने सबसे पहले और सबसे अधिक परचियां लिखीं। उनमें से भक्त धना की भी परची का सारांश यहां प्रकाशित किया जा रहा है। मूल परची पद्यों में है।

धना भगवान का अनन्य भक्त था। भगवान के प्रति उसकी पूर्ण आस्था थी। वह कभी असत्य नहीं बोलता था। वह हरि-भक्तों की सेवा करना अपना परम कर्त्तव्य समझता था।

एक बार स्वयं भगवान उसकी परीक्षा लेने के लिए, जिस समय वह अपने खेत को जा रहा था, उसके मार्ग में साधु का वेश बनाकर आ खड़े हुए और कहा भाई! तुम हरिभक्त कहलाते हो, मुझे भी कुछ घी, खांड, आटा और दूध दो, तुम्हारा मनुष्य जीवन सफल हो जायेगा। धना ने सविनय उत्तर दिया-प्रभो! आप तो अन्तर्यामी है। मैं तो इस समय बीज लेकर खेत जा रहा हूँ। यहाँ मार्ग में तो मेरे पास कुछ भी नहीं है, आप मेरे मकान पधारियेगा, वहां मेरी धर्मपत्नी आपकी इच्छानुसार आपको भोजन करायेगी और आपकी भलीभांति टहल करेगी।

इतना सुनकर साधु ने कहा अरे भक्त! एक साधु को इस तरह क्यों ललचा रहे हो? तुम्हारा यह उत्तर शोभा नहीं देता। हुआ ये कि धना भक्त ने बोये जाने वाले बीज रूप गेहूँ, वहीं साधुवेशी भगवान को दे दिए। उसके साझीदार हाली (हल चलाने वाले) ने आश्चर्य से इसका रहस्य धना से पूछा। धना ने उत्तर दिया कि संतों के आशीर्वाद से सब ठीक हो जायेगा। हाली ने

कर्मों के बहीखातों को भी दुरस्त रखना साहब, एक दिन इसका भी मार्च आयेगा।

समझा कि धना ने व्यर्थ ही साधुओं को बीज देकर गंवाया, इसलिए धना से और बीज लाने के लिए कहा। धना ने उसे धीरज बंधाया। हाली ने सूर्यास्त तक बिना बीज के ही हल चलाया और रात्रि में यह हाल अपनी पत्नी को कह सुनाया। पत्नी ने धना को भिखारी होना है आदि कहते हुए उन दोनों को बुरी तरह कोसा। धना ने उसको भी समझा-बुझाकर मनाया।

कुछ काल बीतने पर एक तूम्बा उगा। धन्ना को अपार हर्ष और हाली भी खूब खुश हुआ। हाली ने लोगों की भीड़ में धना भगत के चरित्र का वर्णन करते हुए बतलाया कि किस प्रकार उसने अपनी आंखों से, बिना बीज डाले ही, खेत को लहलहाते देखा है। सब को आश्चर्य हुआ। हाली और उसकी पत्नी तो धना के पैरों में जा गिरे और अपनी करनी के लिए क्षमा-याचना की। धना ने बड़े प्रेमपूर्वक साधु-सन्तों, हरि-भक्तों को सेवा करने का उनको उपदेश दिया। हाली बहुत प्रसन्न हुआ। उसके खेत में गेहूँ बहुत मात्रा में निपजा।

एक बार की बात है धना के घर पर साधुओं की एक मण्डली आई। धना ने उनका बड़ा सम्मान किया, पति-पत्नी दोनों ने साधुओं के चरणों को धोकर चरणामृत का पान किया। संतों ने देखा कि ये पति-पत्नी दोनों बड़े ही विवेकी है। धना ने उनको नाना भांति के पकवान आदि बनाकर अच्छी तरह भोजन करवाया। सन्तों ने भोजनोपरान्त कथा-कीर्तन किया, जिसमें बहुत से दूसरे नर-नारी भी सम्मिलित हुए। तदुपरान्त धना ने अपने खेत में निपजे हुए तूंबे लाकर एक-एक सबको दिया। तूम्बे बड़े सुन्दर थे, परन्तु भारी भी बहुत थे। इसलिए उनको फोड़ा गया तो पता चला कि वे गेहूं से भरे हुए थे। सब साधुओं ने गेहूँ तो धना भगत को दे दिए ओर स्वयं खाली तूंबा लेकर चल दिये। सचमुच इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं, परमेश्वर में आस्था रखने से असंभव को संभव होते कुछ भी देर नहीं लगती।

अन्त में कवि अनन्तदास ने भगवत्त कृपा से कबीर, नामदेव और पीपा के जो कार्य सिद्ध हुए, उनका उल्लेख करते हुए अपनी लघुता प्रदर्शित की है।

आज भक्ति भाव भारतीय जनता में क्षीण सा होता चला जा रहा है। उसे जागृत करने के लिए ऐसे भक्तों की कथा अवश्य ही प्रेरणादायक सिद्ध होगी। आज के तर्कशील एवं वैज्ञानिक आविष्कारों से चमत्कृत व्यक्ति इन सन्तों एवं भक्तों के चमत्कारिक प्रसंगों को भले ही सच न मानें, पर भक्ति एवं योग साधना से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं, इसमें दो मत नहीं हो सकते। महत्त्व बताने वालों ने कुछ अतिशयोक्ति की होगी, पर उनका उद्देश्य यही है कि लोग भक्ति मार्ग में निष्ठावान बनें। वास्तव में श्रद्धा एक बहुत बड़ी शक्ति है। मंत्रादि में भी वही फलती है। आज श्रद्धा की भी बड़ी कमी नजर आ रही है। अंध श्रद्धा वास्तव में श्रद्धा नहीं। अंधविश्वास निकृष्ट हो सकता है, पर श्रद्धा तो एक पवित्र एवं उच्च भाव है। धर्म की आराधना तभी हो सकती है जब श्रद्धा हो। भगवान् एवं गुरु के प्रति श्रद्धा हुए बिना धर्म रूपी रथ आगे बढ़ ही नहीं सकता। भक्ति में श्रद्धा एवं समर्पण ही प्रधान तत्व है।

सत्तर वर्ष पूर्व प्रकाशित लेख का पुनर्प्रकाशन)

सौजन्य : अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर

***

धनावंशी बंधुओं से अपील

अधिकांश धनावंशी जानते हैं कि वर्षों से मेरी रुचि अपनी जाति के सभी ऐतिहासिक तथ्यों को संकलित करने की रही है । इस निमित्त मैं अनेक वर्षों से कार्य कर रहा हूं । ठीक यही रुचि हमारे समाज के अन्य जिस बंधु की रही है, उनके पास हमारे समाज के कोई ऐतिहासिक तथ्य मुद्रित अथवा प्राचीन हस्तलिखित दस्तावेज के रूप में अगर हैं तो मुझे सूचित कर अनुगृहीत करें, ताकि मैं उन तथ्यों को भी अपने शोधकार्य में शामिल कर सकूं। समाज हित में यह सूचना मुझ तक पहुंचा कर उपकृत करें। यों मेरे पास प्राचीन तथ्यों की कोई कमी नहीं है, पर फिर भी कुछ विशेष जो आपके पास है, उसका उल्लेख भी छूट न जाए, इसलिए आप से यह निवेदन कर रहा हूं। यह निवेदन आप लोग सब तक पहुँचाने का श्रम करें ताकि कार्य में तनिक भी त्रुटि का मैं भागी नहीं बनूं। सादर जय ठाकुर जी की सा। धन्यवाद ।

जो अपना कल्याण चाहते हो, तो सबकी सेवा करो।

आध्यात्मिक-सामाजिक बातें जानें

• चेतन स्वामी

सीखने योग्य बीस गुण

सिंह से-(1) छोटा अथवा बड़ा काम करने की इच्छा होत तो उसे तुरन्त पूर्ण करना। बगुले से-(2) सब इंद्रियों को संयमित करके देशकाल के बलाबल को दृष्टिगत करते हुए सब कामों को सम्पन्न करना। मुर्गे से-3. प्रातःकाल स्वयं उठाकर दूसरों को जगाना। (4) युद्ध प्रसंग में शूरवीरता (5) कण आदि चुगना (6) उसका भाग बांधवादि को देने के पश्चात भक्षण करना। कौवे से- (7) गुप्त मैथुन करना। (8) सब कार्यों में धैर्य रखना (9) जिस समय जो वस्तु मिले उसका संग्रह करना (10) सावधान रहना (11) किसी का विश्वास न करना। कुते से- (12) अधिक भोजन न करना। (13) अल्प भोजन से ही संतुष्ट हो जाना। (14) गहरी नींद में होने पर भी तुरंत जागना। (15) स्वामी सेवा में तत्पर रहना। (16) चोर इत्यादि से परावृत्त न होना। (17) शूरवीर होना। गदर्भ से (18) अत्यंत थक जाने पर भी भार वहन करना। (19) सर्दी-गर्मी का विचार न करना। (20) निरंतर संतुष्ट रहना।
(चाणक्य शतकम्)

बीस धर्मशास्त्र प्रवर्त्तक (धर्म वक्ता)

(1) मनु (2) अत्रि (3) विष्णु (4) हारीत (5) याज्ञवल्क्य (6) उशना (7) अंगिरा (8) यम (9) आपस्तंब (10) संवर्त (11) कात्यायन (12) बृहस्पति (13) पराशर (14) व्यास (15) शंख (16) लिखित (17) दक्ष (18) गौतम (19) शतातप (20) वसिष्ठ

बीस व्यक्तियों के साथ विवाह वर्ज्य

(1) ऋत्विज (2) पुरोहित (3) आचार्य (4) मामा (5) गुरु (6) आश्रित (7) बाल (8) वृद्ध (9) रोगी (10) वैद्य (11) जाति सम्बन्ध (12) बांधव (भाई) (13) माता-पिता (14) बहन (15) पुत्र (16) जामाता (17) पुत्र (18) भार्या (19) कन्या (20) सेवक वर्ग

शिक्षक के बीस गुण

(1) चरित्रवान (2) उत्साही (3) मनोविज्ञान ज्ञान सम्पन्न (4) समय का पाबंद (5) धैर्यवान (6) ज्ञान पिपासु (7) गुणों का आदर करनेवाला (8) न्यायवान (9) सहयोगी भावनावाला (10) विद्यार्थियों के प्रति स्नेह रखनेवाला (11) सादी व स्वच्छ वेशभूषा (12) विनोदप्रिय (13) पाठ की पूर्ण तैयारी (14) धार्मिक निरपेक्ष (15) राजनीति से दूर रहनेवाला (16) देशभक्त (17) नेतृत्व क्षमता वाला (18) चित्रकला भिज्ञ (19) सुधार की इच्छावाला (20) कलावान

सम्प्रदाय के बीस लक्षण

(1) लेखन (2) वाचन (3) अर्थांतर समझना (4) आशंका निवारण (5) प्रचिति (6) गायन (7) नर्तन (8) ताली बजाना (9) अर्थ भेद (10) प्रबंध (11) प्रबोध (12) वैराग्य (13) विवेक (14) लोक का प्रसन्न रखना (15) राजनीति (16) अव्यग्रता (17) प्रसंग जानना (18) उदासीन वृत्ति (19) समता (20) राम उपासना

स्त्री के प्रयोजनशील बीस गुण

(1) स्वस्थ (2) प्रजोत्पादक शक्ति (3) सुचरित्र (4) नियमानुसरण (5) परिमितशीलता (6) लज्जावान (7) आज्ञानुसरण (8) सुघड़पन (9) प्रेम (10) सहनशीलता (11) विश्वासभाजनत्व (12) गृहकार्य दक्ष (13) परिश्रमी (14) सुन्दर (15) धार्मिक (16) शिक्षित (17) न्यायशील (18) अनुकूल (19) स्वमान रक्षण (20) नम्र एवं सुशील।

बीस वैष्णव सम्प्रदाय

(1) श्री सम्प्रदाय (2) वल्लभाचारी (3) मध्वाचारी अथवा ब्रह्म सम्प्रदाय (4) सनकादिक अथवा नीमावत सम्प्रदाय (5) रामानंदी अथवा रामावत (6) राधावल्लभी (7) नित्यानंदी (8) कबीर पंथ (9) खाकी (10) मलूकदासी (11) धनावंशी (12) दादूपंथी (13) रामदासी (14) मीराबाई (15) सखीभाव (16) चरणदासी (17) हरिश्चन्द्री (18) सघनापंथी (19) माधवी (20) वैरागी और नागा संन्यासी।

संसार में जितने भी सम्बन्ध है, वे सब ऋण चुकाने के लिए है।

धनावंश के महत्त्वपूर्ण प्रश्न

विशद परिचर्चा

इस महत्त्वपूर्ण परिचर्चा में हमने नीचे लिखे ग्यारह प्रश्न कतिपय धनावंशी विद्वानों से पूछे। बड़े उत्साह से श्रीमानों ने इनके प्रत्युत्तर प्रदान किये। जिन्हें आगे पढ़ें। इस परिचर्चा में परिव्राजक संत श्री सीतारामदास, डॉ. घनश्यामदास स्वामी, वैद्य अर्जुनदास स्वामी, श्री बस्तीराम स्वामी, रघुवीर आनन्द स्वामी, राधेश्याम स्वामी, सांवरमल स्वामी, पुखराज भाम्बू, छगन स्वामी ने विचार अपने विचार व्यक्त किये हैं।

1. क्या आप धनावंश के पंथ प्रवर्तक श्री धनाजी को ही मानते हैं या किसी अन्य को?
2. धनावंश समुदाय में धार्मिक गतिविधियों का समावेश और अधिक किस प्रकार किया जा सकता है?
3. धनावंश के उत्थान में सामाजिक संगठनों की क्या भूमिका हो सकती है?
4. धनावंश की चौतरफा उन्नति किस प्रकार सम्भव है?
5. क्या हमारी महंतीय व्यवस्था में सुधार आवश्यक है? अगर है तो किस प्रकार?
6. हमारे युवाओं को धनावंश की ओर से क्या संदेश हो दिया जाए?
7. आर्थिक उन्नति के लिए धनावंशियों को कौन-कौन से प्रयत्न करने चाहिए?
8. धार्मिक सम्प्रदाय होने के नाते, क्या धनावंश की नए सिरे से कोई आध्यात्मिक आचरण संहिता तैयार करनी चाहिए?
9. धनावंश स्वामी समाज की सामाजिक रीतियों में किस प्रकार के सुधार की गुंजाइश है, अगर है तो क्या और कैसे?
10. क्या हमारा एक बड़ा श्रद्धा स्थल कायम होना चाहिए? अगर हाँ, तो किस प्रकार का?
11. क्या हमारे समाज की एक नियामक केन्द्रीय संस्था बननी चाहिए। अगर हाँ, तो उसकी रूप-रेखा क्या हो?

पैसों के अभाव से कभी-कभी दुःखी होओगे, पर समझ के अभाव से हमेशा दुःखी रहोगे।

परिव्राजक संत सीतारामदास, गुसांईसर बड़ा के विचार

* अवश्य मानते हैं। धनाजी के बहुत सारे प्रमाण हैं। ये ही हमारे पंथ की शुरुआत करने वाले संत हैं। इन्होंने ही हमें स्वामी बनाया और धर्म की राह पर चलाया। सभी स्वामी समाज समकालीन हैं। यह प्रमाण भक्तमाल देती है।
* धनावंश में धनाजी की मान्यता दृढ़ होने से इसकी धार्मिक गतिविधियों में अत्यधिक बढ़ोतरी हो जाएगी। परिवार में मुखिया की मान्यता न हो तो समाज उच्छृंखल हो जाता है। धर्म सम्प्रदाय में गुरु की मान्यता आवश्यक है, इस बात को सभी धनावंशियों को समझना चाहिए। समाज में संतों का प्राकट्य हो तो धार्मिकता बढ़े।
* धनावंश के उत्थान में सामाजिक संगठनों की बड़ी भारी उपादेयता हो सकती है। संगठन का एक सामजिक दबाव रहता है, हर व्यक्ति को उसके नियमों की पालना करनी पड़ती है। संगठन समाज में नियम बनाता है, प्रगति की अनेक योजनाओं को प्रस्तुत करते हैं। तरह-तरह के आयोजन करते हैं।
* धनावंश की चतुर्दिक उन्नति शिक्षा से सम्भव है। शिक्षित व्यक्ति अपनी उन्नति के सभी प्रयास करता है। शिक्षा केवल विद्यालयी और महाविद्यालयी ही न हो। शिक्षित व्यक्ति सबसे पहले तो अपना सांस्कृतिक उत्थान करे। जब तक वह अपने समाज की परम्पराओं को नहीं जानेगा तो वह आर्थिक उन्नति भले ही करले, सर्वांगीण उन्नति नहीं कर पाएगा। शिक्षा मूल्यहीन न हो।
* हमारी महंतीय व्यवस्था बहुत कमजोर हो गई है। महंत केवल धन सम्पदा के लिए न बनें। महंत की बड़ी भारी जिम्मेदारी होती है समाज के प्रति। उस जिम्मेदारी का उसे पूरा अहसास होना चाहिए। अब धनावंश में महंत परम्परा बढ़नी चाहिए। समाज का विस्तार हुआ है तो महंत भी अधिक संख्या में होने चाहिए। पूर्व महंत द्वारों में भी चेतना लाई जाए। उन्हें नया रूप दिया जाए।
* युवा, समाज की ताकत होती है, उन्हें अपने पंथ सम्प्रदाय की परम्पराओं से अवगत करावें। युवाओं में धनावंश का बोध जागृत करें। युवाओं को अच्छी शिक्षा के लिए भी प्रेरित करें तथा वे समाज की प्रत्येक गतिविधि में पूरे उत्साह से भाग ले, यह पाठ भी उनको पढ़ाया जाना चाहिए। अधिकांश युवाओं को अपने समाज की जानकारी नहीं है।
* आर्थिक उन्नति के लिए सभी प्रकार के प्रयास करने चाहिए। व्यक्ति को अपने मूल्यों की रक्षा करते हुए धनोपार्जन करना चाहिए। धन आवश्यक तो है, पर उसकी प्राप्ति के लिए कभी भी गलत राह पर नहीं चलना चाहिए। आलस्य व्यक्ति का शत्रु है, उसका परित्याग कर उद्यम में लगना जरुरी है। आर्थिक उन्नति के अनेक रास्ते हैं, पर सवाल कर्त्तव्य निष्ठा का है। कर्त्तव्यनिष्ठ होकर, देश परायण होकर धन कमाना चाहिए।
* हाँ धनावंश आध्यात्मिक पंथ है। आध्यात्मिकता का आधार आचरण है। आचरण सुघड़ हो, सर्वप्रिय हो, नैतिकता से परिपूर्ण हो, धार्मिकता से ओतप्रोत हो। धनावंश अगर अपनी प्राचीन नैतिक नियमावली को भूल गया है तो उसे इसके लिए पुन: स्थापना के लिए सभी प्रयास करने चाहिए।
* धनावंश में समय के अनुसार बहुत कुछ सुधार की जरुरत है। विवाह शादियों को दिखावा और खर्च से मुक्त किया जाए। डीजे पर कठोर प्रतिबंध हो। दहेज न लिया जाए, न दिया जाए। ओढ़ावणी बंद हो। औसर पर भी प्रतिबंध लगे। मृत्यु बैठक दिखावा मुक्त हो। व्यसन पर पूर्ण प्रतिबंध लगे। धनावंशी स्वामी समाज में नशा तो होना ही नहीं चाहिए। विवाह उचित आयु में ही कर दिया जाना चाहिए। अध्ययन के बहाने से लड़के-लड़कियों के विवाह में विलम्ब करना ठीक नहीं। इसके कारण अनेक विसंगतिया खड़ी होती है।
* जिस जगह से बहुत से धनावंशियों की आस्था जुड़े, उस स्थान से अपनापन हो तथा भक्ती जुड़े, ऐसा एक श्रद्धास्थल शीघ्र बने। इस सम्बन्ध में धनावंशी समाज को तेजी से सोचना चाहिए। सुविधापूर्ण जगह पर शीघ्र श्रद्धास्थल कायम हो।
* हां, समाज की एक केन्द्रीय संस्था बने। संस्था का बड़ा भारी महत्त्व है। धनावंशी समाज को शीघ्र यह कार्य कर देना चाहिए। इसके अभाव में समाज अपनी सांगठनिक क्षमता खो रहा है।

हमारे पास जो कुछ है उसका आनन्द तभी ले पावेंगे
जब हमारे पास जो नहीं है, उसकी चिन्ता छोड़ोगे।

8वां

होली स्नेह मिलन समारोह

फागोत्सव 2020

हर्षोल्लास एवं धूमधाम से सम्पन्न

श्री धनावंशी स्वामी समाज, सूरत

कम्युनिटी हॉल, पर्वत गाम, सूरत

29 फरवरी 2020, शनिवार

इस वर्ष की धनावंशीय प्रतिज्ञा
कभी भी थाली में भोजन जूठा नहीं छोड़ना है

धनावंशी बैरागी स्वामी समाज, सूरत कार्यकारिणी

रामविचान धूसियां अध्यक्ष | देवीदत्त स्वामी कोषाध्यक्ष | विकास स्वामी सचिव | पवन धूसियां प्रचार मंत्री | दयालप्रसाद स्वामी उपाध्यक्ष | रामचंद्र स्वामी सहकोषाध्यक्ष | जगदीश स्वामी सहसचिव | लोहवदान स्वामी प्रचार मंत्री

श्री धनावंशी स्वामी समाज, सूरत (गुजरात)

8वां होली स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न

समारोह के साक्षी अतिथिगण

श्री अभिनेष महर्षि
विधायक, रतनगढ़

श्री गिरधारीदास स्वामी
सरपंच पति, रतुसर

श्री घनश्याम स्वामी
कस्टम ऑफिसर, मुम्बई

श्री गणपतदास स्वामी
सरपंच, गारबदेसर

श्री धनावंशी स्वामी समाज, सूरत (गुजरात)

8वां होली स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न

चित्रमय झलकियां

धनावंशी प्रतिज्ञा-इतना ही लो थाली में, व्यर्थ ना जाये नाली में

धनावंशी स्वामी समाज के स्नेह मिलन समारोह में धनावंशी परिवारों की विशाल उपस्थिति रही।

श्री धनावंशी स्वामी समाज के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं

ग्राम पंचायत : रातुसर

पंचायत समिति : सरदारशहर

बिमलादेवी स्वामी

धर्मपत्नी : श्री गिरधारीदास स्वामी फौजी

सरपंच पद पर भारी मतों से विजयी होने पर हार्दिक शुभकामनाएं

सम्पर्क-9166886585

* तीन प्राथमिकताएँ *

- शुद्ध पेयजल की आपूर्ति
- सड़क व नाली निर्माण
- शिक्षा की बेहतर व्यवस्था

शुभेच्छु : समस्त ग्रामवासी, रातुसर (सरदारशहर)

डॉ. घनश्यामदास स्वामी, नोखा के विचार

- हर धनावंशी को अपने गुरुदेव धनाजी महाराज के प्रति श्रद्धाभाव रखना चाहिए। मैं धनावंश के पंथ प्रवर्तक धनाजी महाराज को अवश्य मानता हूँ और हर धनावंशी से यह अपील भी करुंगा कि उन्हें धनाजी महाराज को वांछित आदर देना चाहिए।
- धनावंश में धार्मिक गतिविधियां क्यों नहीं बढे? अवश्य बढ़नी चाहिए। हमारे पूर्वजों ने जो धार्मिक रीतियां स्थापित की हैं, वे उचित और आवश्यक हैं, उनका पालन किया जाना जरुरी है। हम अपनी धार्मिक परम्पराओं का पालन कर हमारी धार्मिक विचारधारा को आगे बढ़ा सकते हैं। धार्मिक परम्पराओं को सहेजना जरुरी है।
- धनावंश के उत्थान में सामाजिक संगठनों की महत्ती भूमिका हो सकती है, पर अफसोस अब तक हमारे यहां कोई मजबूत सामाजिक संगठन नहीं है। अब हमें आगे बढ़कर हमारा साामजिक संगठन खड़ाकर सामाजिक गतिविधियों को गति देने का काम करना चाहिए। समाज में नई बातों का प्रचलन हम सामाजिक संगठन के माध्यम से आसानी से कर सकते हैं। समाज के बिखराव को भी समाप्त कर सकते हैं।
- अगर हमारा समाज युवाओं और उम्रदराज लोगों को एक साथ लेकर योजनाबद्ध ढंग से कार्य करे तो समाज उन्नति के पथ पर तेजी से अग्रसर हो सकता है। समाज में दो कार्य प्राथमिक तौर पर किए जाने की आवश्यकता है। एक तो नशा मुक्ति तथा दूसरा बालिका शिक्षा।
- धनावंश में महंत परम्परा का बड़ा भारी महत्त्व था, किसी समय महंतो का समाज पर धार्मिक और सामाजिक नियंत्रण था। धीरे–धीरे द्वारे समाप्त होने लगे या उनमें शैथिल्य आने लगा। अब इस व्यवस्था को नए सिरे से पुनः नए सोच के साथ खड़ा करने की आवश्यकता है। महंत द्वारे आध्यात्मिक शिक्षा के केन्द्र बने। नए महंतों को धनावंशी समाज अपने खर्चे से उत्तमोत्तम शिक्षा दिलवाए, ताकि वे महंत आगे हमारे समाज को प्रबोधित कर सकें।
- समाज के युवाओं में समाज हित में कार्य करने की भावना जागृत की जाए। हमारे युवा नशा मुक्त रहें, स्वस्थ हों तथा सुशिक्षित हों, इस पर समाज विचार करे। तभी एक प्रभावशाली समाज का निर्माण होगा।
- आर्थिक उन्नति के लिए समाज के सभी लोगों को अथक परिश्रम करना चाहिए तथा अपनी ऊर्जा का उचित उपयोग करना चाहिए। हर धनावंशी के मन में यह भाव जन्मे कि वह अपने समाज के लोगों की आर्थिक उन्नति में अपना योगदान किस तरह से कर सकता है। हम एक दूसरे को सहयोग और दिशा निर्देश करेंगे तो आर्थिक रुप से सुदृढ़ होते देर नहीं लगेगी। एक दूसरे के प्रति व्याप्त ईर्ष्या के भाव को समाप्त करना होगा।
- बिना आचरण संहिता के तो कोई सम्प्रदाय ही नहीं होता। धनावंश पांच शताब्दी प्राचीन सम्प्रदाय है, जिस समय इस सम्प्रदाय की स्थापना हुई, इसके निश्चित ही कतिपय धार्मिक–सामाजिक नियम बने। उन नियमों पर हमें अब भी विनम्रतापूर्वक चलना चाहिए। एक आचरण संहिता का हमें निष्ठापूर्वक पालन करना ही होगा।
- धनावंश को अपने समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करना होगा। औसर की परम्परा को सम्पूर्ण रूप से समाप्त कर देना चाहिए। क्योंकि आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को इससे बड़ी आर्थिक हानि होती है। मृत्यु बैठक के दिखावे, उसकी मनुहारों को बंद करना चाहिए। दिनोंदिन हो रहे दिखावों पर रोक लगे।
- अन्य सुमदायों की भांति धनावंश का भी एक श्रद्धा केन्द्र हो जो पूरे समाज को एकता का संदेश प्रदान करे।
- केन्द्रीय संस्था तो बननी ही चाहिए। इसके लिए पूरे समाज से राय लेनी चाहिए। एक बड़ी कमेठी का गठन हो, जिसमें सभी अपने रचनात्मक विचार रख सके। सभी को उचित प्रतिनिधित्व मिले।

कीमत दोनों की चुकानी पड़ती है, बोलने की भी और चुप रहने की भी।

वैद्य अर्जुनदास स्वामी, हरियासर के विचार

* धनावंश की उत्पत्ति धनाजी के अनुयायियों के अलावा किसी से होना संभव ही नहीं है। धनाजी हुए तभी तो धनावंश सम्प्रदाय अस्तित्व में आया। एक धनावंशी को अपने के निर्माण में गुरु महाराज धनाजी के योगदान को कभी नहीं भूलना चाहिए।
* धनावंश सम्प्रदाय धार्मिक आचरणों को लेकर बना, लेकिन धीरे-धीरे इसमें शैथिल्य आता जा रहा है। समाज में धर्म के प्रचार का जिम्मा संतों-महंतों का हुआ करता है। दुर्भाग्य से हमारे महंत अधिकांश गृहस्थी होकर अपने पद की गरिमा को भूल बैठे और समाज में संत तो न के बराबर है, ऐसे में समाज को दिशा कौन दे? धार्मिकता की क्या बात बताएं, बहुत से परिवार घर ऐसे हैं, जिनमें प्रतिदिन भगवत पूजा ही नहीं होती। जगह-जगह बड़े धार्मिक आयोजन हो ताकि लोगों को अपना धार्मिक अस्तित्व याद आए।
* समाज उत्थान में धार्मिक संगठनों की भूमिका को कौन नकार सकता है? धनावंश में समर्पित सोच के लोगों को आगे आकर दो-तीन बड़े संगठन खड़े करने चाहिए। पहले बड़े संगठन बने, फिर तहसील स्तर पर उसकी इकाइयां काम करे।
* जब सभी समाज अपनी चौतरफा उन्नति के लिए प्रयासरत हैं तब धनावंश पिछड़ा हुआ क्यों रहे। समाज का विकास तभी सम्भव है, जब लोग दुराग्रह छोड़कर इसके हित के लिए संकल्पबद्ध हों।
* हां, हमारी महंतीय व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की दरकार है। अब पुरातन महंत व्यवस्था कोई काम की नहीं रही। नए-नए महंत बनाए जाएं जो समाज की धार्मिकता को आगे बढ़ाने वाले हों, जो धार्मिक साहित्य का भरपूर ज्ञान रखते हों, उन्हें ही महंत बनाया जाए।
* समाज के कार्यों में युवाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए। युवाओं को समाज के लिए प्रेरित किया जाए। तहसील स्तर पर युवाओं के सम्मेलन हों, जिनमें उन्हें अपने समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराया जाए तथा उन्हें उनके कर्त्तव्य बोध से रुबरु कराया जाए।
* आर्थिक उन्नति एक ऐसा पक्ष है, जिसके लिए हर व्यक्ति अपने आप से सचेष्ट रहता है। हर व्यक्ति अपनी आर्थिक उन्नति करना चाहता है, मगर समाज में एकता की भावना हो तो एक हाथ, दूसरे हाथ को सहारा दे सकता है। ग्रामीण क्षेत्र में जो परिवार आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं, उनकी उन्नति के लिए प्रयास किए जाएं। गरीब बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा दी जाए। नौकरी और व्यवसाय में सहयोग दिया जाए।
* वर्तमान में धनावंशी समाज अपने को दबा हुआ या किसी अन्य समाज का पिछलग्गू समझता है। कई गांवों में धनावंशियों की पर्याप्त आबादी होने के बावजूद वे किसी दूसरे के नेतृत्व में रहना स्वीकार कर लेते हैं। अपने स्वतंत्र और दबंग नेतृत्व का विकास नहीं करते।
* हां, हम जय ठाकुरजी बोलने वालों की एक धार्मिक और सामाजिक संहिता होनी चाहिए। यह संहिता दोहरे स्तर पर कार्य करेगी। एक ओर तो यह सामाजिक रूप से एकता की डोर में बांधेगी और दूसरी ओर हमारे धार्मिक आचरण नियंत्रित होंगे। जन्मना बालक को पता होगा कि मैं धनावंशी हूं और मेरे निम्न कर्त्तव्य हैं।
* हमारी सामाजिक रीतियां विकृति का शिकार होती जा रही हैं। दिनोदिन वे खर्चीली और दिखावा पसंद तथा फूहड़ होती जा रही है। जरुरत तो पुराने रीति रिवाज में सुधार की थी, किंतु नई रीतियां तो और ही बोझिल हैं। रीतियां सादगीपूर्ण तथा संस्कृति को बढ़ावा देने वाली होनी चाहिए। माता-पिता की तेरहवी या सतरहवीं होनी तो चाहिए, पर वह संतुलित और धार्मिकता के दायरे में हो। सत्संग-संकीर्तन हो, ब्रह्मभोज हो, पर संक्षिप्त। ओढावणी केवल अपने से जुड़े परिवार के सामान्य वस्त्रों तक सीमित हो। सोना-चांदी गहनों का कोई औचित्य नहीं है। किसी भी रीति में प्रदर्शन नहीं करना है।
* हमारा श्रद्धास्थल शीघ्र कायम हो, यह हमारी प्राथमिकता है। इस सम्बन्ध में मेरा सुझाव गारबदेसर मंडल को पूर्ण रूप से विकसित करने का है। यह हमारी प्राचीन जगह है और हरिदासजी महाराज की समाधि भी है, यहां प्रतिवर्ष छोटा मेला भी लगता है।
* केन्द्रीय संस्था जब तक नहीं बनेगी, समाज के बहुत से कार्य अटके हुए रहेंगे। शीघ्र बने, ऐसा प्रयास हम सबको करना है।

कुशल व्यवहार आपके जीवन का आईना है,
इसका आप जितना अधिक इस्तेमाल करेंगे, आपकी चमक उतनी ही बढ़ेगी।

बस्तीराम स्वामी (गोरा), मेड़ता सिटी के विचार

- मैं और मेरा पूरा परिवार धनावंश के पंथ प्रवर्त्तक धनाजी महाराज में गहन श्रद्धा रखते हैं। प्रतिवर्ष उनकी जयंती को हम श्रद्धापूर्वक मनाते हैं। मैं तो चाहता हूं, हर धनावंशी परिवार अपने पंथ गुरु को यथोचित सम्मान प्रदान करे। हर परिवार के पास धनाजी का चित्र या प्रतिमा होनी चाहिए।
- धनावंश धार्मिक जाति है, इसलिए उसे अपने सभी धार्मिक आयोजनों को भूलना नहीं चाहिए। हर धनावंशी को अपने मंदिरों में तथा घरों में धूमधाम से रामनवमी तथा कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व को समारोहपूर्वक मनाना चाहिए। एक बात मैं विनम्रतापूर्वक अपने धनावंशी भाइयों से कहना चाहता हूं कि हर भाई-बहिन को समूचे वर्षभर एकादशी का व्रत अनिवार्यतः करना चाहिए। इतना ही नहीं, धनावंशी परिवारों में धार्मिकता का अधिकाधिक समावेश हो, इसके लिए कीर्तन-सत्संग का भी घर या मंदिर में नियम बनाना चाहिए। धार्मिक ग्रंथों का पठन-पाठन हो।
- धनावंश के उत्थान में सामाजिक संगठनों की बड़ी भूमिका हो सकती है। सामाजिक संगठन समाज पर निमंत्रण का कार्य करते हैं। हमारे समाज में आज दूसरे समाजों की देखादेखी अनेक दुष्प्रवृत्तियां घर कर रही है। नशे का प्रचलन भी बढ़ रहा है। नशा करनेवालों में समाज का संकोच और भय खत्म हो रहा है। नशा करने से बुद्धि और विवेक नष्ट हो जाता है। अविवेकी व्यक्ति से समाज को कोई लाभ नहीं मिलता। विवेकी लोग ही समाज को उन्नति प्रदान करते हैं। नशा मुक्ति के लिए समाज में सघन अभियान छेड़ने की आवश्यकता है।
- धनावंश की चौतरफा उन्नति श्रेष्ठ शिक्षा और राजनीतिक प्रगति से संभव है। हर धनावंशी जीवन को धन्य बनानेवाली शिक्षा ग्रहण करे तथा उस शिक्षा से स्वयं, परिवार तथा परिवार का भला कैसे किया जा सकता है, इस तथ्य पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। राजनीति में जानेवाले लोग भी सद्भावनापूर्वक समाज को आगे ले जाने के प्रयास करे।
- धार्मिक समाज में महंत बहुत जरुरी हैं। महंत व्यवस्था कोई मजाक में नहीं शुरु की गई थी। यह व्यवस्था अगर ध्वस्त हो रही है तो इसमें समाज की अवहेलना का भी बहुत बड़ा हाथ है। जो महंतद्वारे बंद जैसे पड़े हैं, उन्हें वापस शुरु किया जाएं। महंतों को समाज एक मीटिंग कर उनके दायित्वों की याद दिलाए। महंत परम्परा का पुनुर्द्धार बहुत आवश्यक है। समाज इस पर विचार करे।
- जहाँ धनावंश के युवा अधिक संख्या में अध्ययनरत हैं, वहां जाकर धनावंशी बच्चों में अपने पंथ की मर्यादाओं और परम्पराओं का ज्ञान कराना आवश्यक है। युवकों के सम्मेलन किए जाएं, उन्हें उनके सामाजिक दायित्वों के प्रति आगाह किया जाए, तथा युवकों को शिक्षा के बेहतरीन संसाधन उपलब्ध कराए जाएं।
- आर्थिक उन्नति हर समाज के लिए बहुत आवश्यक है। हाल में कई समाजों ने बड़ी तेजी से अपनी आर्थिक उन्नति की है। शिक्षा से नौकरियां हासिल की जा सकती हैं परन्तु नौकरी में स्पर्धा को संघर्षपूर्ण ढंग से व्यवसाय की ओर उन्मुख होना चाहिए। व्यवसाय में भरपूर संभावनाएं होती हैं। व्यवसाय अपनी रुचि का ही करना चाहिए। जो पहले से व्यवसायरत भाई हैं, उन्हें अपने लोगों को गाइड करना चाहिए और जो मदद की जा सकती है, उसमें झिझकना नहीं चाहिए।
- धार्मिक सम्प्रदाय है तो धनावंशी की भी अपनी आचरण संहिता आवश्यक है। हम कुछ धार्मिक नियमों पर चलें, यह तो बहुत जरुरी है।
- धनावंश अनेक कुरीतियों का शिकार होता जा रहा है। अनेक कुरीतियों से समाज की अवनति होती है। इन दिनों अट्टा-सट्टा की वजह से वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद यानि छुटापे बहुत हो रहे हैं। यह बहुत खराब हो रहा है। जरा-जरा सी बात पर छुटापा हो जाना आजकल आम बात हो गई है। इस पर नियंत्रण के लिए एक कमेटी का गठन किया जाना अत्यंत आवश्यक है। जिस घर में छुटापा की नौबत आ रही है, उसका मामला हमारे सामाजिक संगठन के संज्ञान में आना चाहिए। समिति के लिए जांच-पड़ताल करे। समाज में अतः अनुशासन कायम होना आज जरुरी हो गया है।
- हां, कम से कम एक श्रद्धास्थल जरुर बनना चाहिए। श्रद्धा से शक्ति मिलती है। उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए धनावंशी वर्ष में कम से कम एक बार उस श्रद्धा स्थल पर स्वप्रेरणा से इकट्ठे हों तथा वहां बैठकर समाज हित की बात करें। श्रद्धा स्थल वहां बनना चाहिए, जहां धनावंशी स्वामियों का बाहुल्य है। लाडनूं-सुजानगढ़ के क्षेत्र में सर्वाधिक धनावंशी भाई हैं।
- हमारी केन्द्रीय संस्था होनी चाहिए और उसके सैकड़ों लोग ट्रस्टी हों। यह संस्था समाज की हर गतिविधि पर अपना नजर रखे तथा समान हित के सभी कार्य करे।

खुद को खुश रखने के तरीके खोजे, तकलीफें तो आपको खोज ही रही है।

रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद के विचार

- मैं यह भलीभांति जानता हूं कि भक्त शिरोमणि धनाजी महाराज ही धनावंशी स्वामी समाज के पंथ प्रर्वतक हैं। वे मेरे सम्मानीय गुरुदेव हैं और पूरे धनावंशी स्वामी समाज के भी एकमात्र वे ही पंथ गुरु हैं। मैं उनको नमन करता हूं।
- धनावंशी सम्प्रदाय की स्थिति इन दिनों एक जर्जर इमारत की तरह हो रही है, इसका जीर्णोद्धार समय की मांग है, नहीं तो यह कभी भी ध्वस्त हो सकती है। आज हमारे धनावंशी समुदाय के अधिकांशजन को अपने समुदाय की बहुत सी जानकारियां नहीं है। हम केवल इतना ही जानते हैं कि हम धनावंशी हैं, इससे अधिक जानकारी किसी-किसी व्यक्ति को ही हो सकती है जबकि अपने समाज की संस्कृति, इतिहास, आचार-व्यवहार की जानकारी समाज के प्रत्येक व्यक्ति को होनी चाहिए। हमारा सम्प्रदाय बहुत अल्प है, मगर इसे अपने गुरु के सम्मान का ध्यान नहीं है। धार्मिक रूप से समाज पिछड़ता जा रहा है। अगर इस समाज के लोगों की गुरु भक्ति दृढ़ होती तो इसकी यह दशा नहीं होती।
- सम्प्रदाय के उत्थान और प्रगति के लिए गुरु भक्ति को स्थान देना होगा। गुरु के बिना सम्प्रदाय की कल्पना ही नहीं की जा सकती। विद्वानों को चाहिए समाज को गति देने के लिए संगठन खड़े करे। हमारे पास नई पीढ़ी को देने के लिए कुछ ठोस नहीं है। हमारा इतिहास तैयार होना चाहिए। हरेक पंथ, समुदाय और जातियां अपने समाज के इतिहास ग्रंथ तैयार करवाने के लिए सचेष्ट रहती है। इस नाते धनावंशी समाज लगभग निद्राग्रस्त है। जिस कौम का इतिहास नहीं होता, वह अगर एक धार्मिक सम्प्रदाय के रूप में है तो उस सम्प्रदाय की धार्मिकता का आधार क्या है?

  धनावंशी सम्प्रदाय की एक बड़ी धार्मिक संस्था होनी चाहिए। जो सम्प्रदाय के लिए काम करे। इसमें धार्मिक साहित्य से वाकिफ लोग, समर्पित लोग काम करें।
- धनावंशी सम्प्रदाय की धार्मिक और आध्यात्मिक परम्परा निरंतर बनी रहे, इसके लिए केवल पुराने महंतो द्वारों से काम नहीं चलना है। हमारे अधिकांश महंत द्वारे तो लगभग निष्क्रिय हो चुके हैं। एक गुरुधाम का होना अनिवार्य है। महंत परम्परा में आमूलचूल परिवर्तन अब जरुरी हो गया है। यह अब एक कुटुम्बिक संस्था बनकर रह गई है। जब तक महंत धनावंशी सम्प्रदाय की धार्मिक उन्नति में नहीं लगेंगे, तब तक उनका कोई औचित्य नहीं है। महंत व्यवस्था की समीक्षा समाज के विद्वान लोग करे और यह निश्चित करे कि विद्वान महंतों की गद्दियां या स्थल कैसे विकसित किए जाएं। गुरु धनाजी महाराज की विचारधारा, उनकी साखी, पदों, परचियों, ग्रंथों, भक्तमालों, सिख धर्म के जिन विद्वानों ने धनाजी पर कार्य किया है उस सामग्री को इकट्ठा किया जाए। उसे समाज में प्रचारित-प्रसारित किया जाए। गुरु धनाजी की महिमा का लेखन किया जाए।

  हमारे गुरु महाराज धनाजी ने स्वामियों से साधपन सेने तथा भूखे को भोजन देने के लिए खेती-किसानी का संदेश दिया था। उन्होंने एक भी धनावंशी को मांगकर खाने की बात नहीं कही। मांगकर खाना धनावंशी परम्परा नहीं है। धनावंशी वह है जो किसी को देने का भाव रखे। धनाजी महराज ने तो अपना बीज भी भूखे साधुओं को खिला दिया था। किसान अन्नदाता है। धनाजी अन्नदाता थे, उन्होंने उन्हीं लोगों को अपना अनुयायी बनाया जो कठोर परिश्रम करके खेती करते थे और स्वयं तथा दूसरों का पेट भरते थे। हम उन भक्त श्रेष्ठ धनाजी के अनुयायी हैं।
- धनावंशी सम्प्रदाय की प्रगति के लिए योग्य और विद्वान महापुरुषों को आगे आकर अपना योगदान करना चाहिए। एक आध्यात्मिक संस्था का निर्माण अतिशीघ्र हो।
- हर जाति अपने आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नशील है। आर्थिक विकास के तीन आधार हैं, शिक्षा, व्यवसाय और उन्नत कृषि। आज का धनावंशी शिक्षा और व्यवसाय की सफलता के लिए संघर्षरत है। इसमें समाज का योगदान यह हो सकता है कि वह अधिक संगठित होकर अपने समाज की आर्थिक उन्नति के लिए हर तरह की मदद करे।
- धनावंश की अपनी एक आचरण संहिता रही होगी, पर वर्तमान में वह पूर्ण रुप से दिखाई नहीं देती। निश्चय ही अगर धनावंश एक धार्मिक सम्प्रदाय है तो उसकी एक धार्मिक संहिता तो होनी ही चाहिए। पुरानी संहिता में नए मूल्यों को जोड़ा जा सकता है।
- रीति-रिवाज सभी समाजों के बदल रहे हैं। तेजी से आ रहे परिवर्तन से धनावंशी समाज बचा हुआ नहीं है। डीजे जैसी कुछ फुहड़ताएं भी आ रही है। दहेज प्रथा पर तो पूर्ण रोक अपने समाज में लगनी चाहिए।

पसंद उसे करें जो आपको परिवर्त्तित करे, प्रभावित तो मदारी भी कर सकता है।

राधेश्याम स्वामी (गोदारा), नागौर के विचार

- धर्म एवं सामाजिकता व्यक्तिगत सोच पर निर्भर करती है। प्रत्येक समाज और जाति का कोई न कोई पंथ प्रर्वत्तक निश्चित रूप से होता है। इस संदर्भ से मेरी पहचान एक धनावंशी के रूप में है और धनावंशी स्वामी समाज के पंथ प्रर्वत्तक के रूप में, मैं भक्तिकाल के महान संत धनाजी महाराज को मेरा पंथ प्रवर्त्तक मानता हूँ, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।
- धनावंश सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव एक धार्मिक सम्प्रदाय के रूप में हुआ था और वर्तमान में भी यह काफी हद तक धार्मिक है, लेकिन अन्य समाजों की भांति भौतिक प्रभाव से अछूता हमारा सम्प्रदाय भी नहीं है। अनेक विकृतियां आ रही हैं, जिन्हें मेरे ख्याल से इन उपायों को अपनाकर दूर किया जा सकता है। (अ) परम्परागत रीति-रिवाजों में समन्वय स्थापित करते हुए प्रत्येक घर में नियमित पूजा-संध्या वंदन में घर के बुजुर्गों के साथ युवा और बालकों की भागीदारी बढ़ाई जाए। (ब) सामाजिक स्तर पर वर्ष में एक ऐसा आयोजन हो, जिसमें समाज के प्रबुद्धजन तथा उच्च धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति के विचारों को युवा, बालक, वरिष्ठजन सब सुनें। (स) वर्ष में एक मातृशक्ति सम्मेलन हो, संतान को संस्कार माताएं-बहने देती हैं। माताओं-बहनों को अग्र पंक्ति में लाया जाए। (द) समाज के समारोहों में प्रेरणीयजनों को विचार व्यक्त करने में प्रमुखता दी जाए।
- किसी भी समाज के उत्थान में सामाजिक संगठनों का निर्विवाद महत्त्व होता है। पूर्व में धनावंशी समाज संगठित रहा है। समाज का नेतृत्व करने के लिए ही महंत व्यवस्था थी। विद्वज्जन मिलकर समाज विकास का चिंतन करते थे। समाज में गलत गतिविधियों के प्रति अनुशासनात्मक और दंडात्मक व्यवस्था थी। वर्तमान में समाज अनेक विकृतियों का शिकार होता जा रहा है। इन विकृतियों के निवारणार्थ सामाजिक संगठन अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। समाज के अस्तित्व को बचाने में सामाजिक संगठनों की अति आवश्यकता है। ये संस्कार और वैज्ञानिक सोच के साथ काम करे।
- समाज की चौतरफा उन्नति के लिए निम्न प्रयास किए जा सकते हैं। (अ) धार्मिक संस्कारों को कायम रखने के लिए समय-समय पर धार्मिक आयोजन किए जाएं। (ब) समाज के आर्थिक विकास के लिए समाज के उद्यमी युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए तथा उच्च पदस्थ अधिकारी नौकरी के लिए प्रेरणाएं दे। (स) सामाजिक सोच को विस्तार देने के लिए ग्राम-तहसील, जिला स्तर पर संगठन कायम किए जाएं। प्रदेश स्तर के नेतृत्व मंडल को मार्गदर्शक के रूप में कार्य करना चाहिए। (द) समाज में राजनीति में रुचि रखनेवाले व्यक्ति को आगे बढ़ने में प्रोत्साहित किया जाए वह सरकार में समाज की भागीदारी करे। (च) शैक्षणिक उत्थान के लिए शैक्षणिक छात्रावासों का निर्माण हो। ये छात्रावास धनावंशी विद्यार्थियों को शैक्षणिक माहौल उपलब्ध कराए। इनका संचालन स्थानीय समिति करे। (छ) समाज का उत्थान केवल पुरुष वर्ग अकेला नहीं कर सकता। महिलाओं को भी उत्थान के लिए प्रेरित किया जाए। बालिका शिक्षा के लिए विशेष योजना बने। अलग से सुदृढ़ महिला संगठन की आवश्कता है।
- हमारे महंत समाज को दिशा देते थे। कालांतर में यह व्यवस्था खुद विकृत होकर छिन्न-भिन्न हो गई है। समाज ने महंतों को लगभग नकार दिया है। यह व्यवस्था खराब नहीं है, सुधार की जरुरत है। सुशिक्षित तथा धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति को यह पद प्रदान किया जाए, तभी समाज स्वीकार करेगा। अधिक संख्या में महंत स्थापित करने की बजाय एक जिले में एक महंत की व्यवस्था को प्रारम्भ किया जाए। जिले के व्यक्ति मिलकर ऐसे व्यक्ति का चुनाव करे। व्यक्ति सुसंस्कारित, शिक्षित, धार्मिक तथा घरेलू दायित्वों से मुक्त हो तथा अपना पूरा समय प्रभु भक्ति तथा समाज हित में दे।
- समाज का भविष्य समाज के युवा ही हैं। युवाओं में सामाजिक सोच, संस्कार भरे जाएं। इसके लिए युवा संगठन भी बने। आज का युवा भौतिकता की चकाचौंध में फसा है, उसे पथ भ्रष्ट होने से बचाया जाए। वर्ष में एक युवा परिचय सम्मेलन आयोजित हो।
- किसी भी सामाजिक संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए एवं उसके समग्र विकास के लिए एक केन्द्रीय संस्था का होना नितांत आवश्यक है। केन्द्रीय संस्था की स्थापना के लिए सर्वप्रथम राजस्थान में विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित विभिन्न सामाजिक संगठन एवं समितियां कार्य कर रही है, उनका प्रदेश स्तर का एक सम्मेलन बुलाया जाए। उन समितियों को मिलाकर प्रदेश स्तर की एक संस्था का गठन किया जाए। प्रति दो वर्ष से प्रदेश स्तर की समिति का पुनर्गठन कर नए सदस्यों को जोड़ा जाए। प्रदेश स्तर की समिति के निर्देशन में ही एक केन्द्रीय संस्था का निर्माण किया जाए। केन्द्रीय संस्था प्रदेश की सभी संस्थाओं की नियामक संस्था हो। तभी छोटे स्तर की संस्थाएं सुचारु रूप से कार्य कर पाएगी।

हमेशा अपने दिल और दिमाग को शांत रखें क्योंकि लोहा ठण्डा ही मजबूत होता है गर्म तो किसी भी आकार में ढल सकता है।

सांवरमल स्वामी, आबसर के विचार

1. जी हां। हम धनांवश के पंथ प्रवर्तक श्री धनाजी को ही मानते है।
2. किसी भी समुदाय में धार्मिक गतिविधियां मनुष्य को समान्यतः अपनी जननी से मिलते है। मातृशक्ति के शैक्षिक/आर्थिक/ सामाजिक उत्थान से धनांवश समुदाय के धार्मिक गतिविधियों का समावेश किया जा सकता है।
3. समाजिक संगठन व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में सहयोग कर सकता है। आज के आधुनिक जीवन शैली में अच्छे सामाजिक संगठन व्यक्ति को पारिवारिक माहौल प्रदान कर धनांवशियों की अपनी परम्परा जीवित रखने में सहायक हो सकते हैं।
4. चौतरफा उन्नति के लिए परिवार व समाज का उन्नत होना आवश्यक है। उचित शिक्षा, व्यवसाय, एवम् समाज के सदस्यों में भाईचारे की बढ़ोतरी कर धनावंश की चौतरफा उन्नति सम्भव है।
5. मंहत धनावंश के प्रतीक हैं आज का युग विज्ञान का युग है। ज्ञान व्यक्ति की अंगुलियों पर उपलब्ध है ऐसे में महंतो को हिन्दु धर्म एंवम् धार्मिक साहित्य का प्रचुर ज्ञानार्जन आवश्यक है। एक ऐसी संस्था हो जो महन्तों के ज्ञानार्जन की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करे। ताकि महन्त आज के धनावंश के धार्मिक/बौद्धिक प्रश्नों का समुचित जवाब दे सकें।
6. आज का युवा भाग्यशाली है जिसने धनावंश में जन्म लिया है। आज के युवा का वर्ष में कम से कम एक बार अपने महन्त से, शिक्षा से जुड़े, व्यवस्था से जुड़े धनावंशी बुजुर्गो से समाज की चर्चा अवश्य करनी चाहिए।
7. आर्थिक उन्नति के लिए निम्न प्रयत्न किए जाने चाहिएः–
   (क) धनावंशियों को योग द्वारा अपने शरीर को निरोग रखना। (ख) उपयुक्त शिक्षा ग्रहण करना। (ग) धनांवश के सामाजिक संगठनों द्वारा युवाओं को व्यवसाय/सरकारी नौकरी के लिए उपयुक्त जानकारी उपलब्ध करवाकर। (घ) व्यसन से दूर रहकर।
8. धनांवश की आज की स्थिति दयनीय है। हमारे सम्प्रदाय के प्रतीक गायब है। युवा पीढ़ी को अपने सम्प्रदाय की जानकारी शून्य के बराबर है। गांव में राजनीतिकरण से धनावंश के अन्दर एकता गायब है। आज के बिखरी हुई परिस्थितियों का कारण जानकर, आज के अनुरूप आचरण संहिता तैयार करना समय की मांग हैं।
9. निम्न कमियां पाई गई हैः–
   (क) परिवार व समाज में भाईचारा नदारद है।
   (ख) परिवारों द्वारा आध्यात्मिकता को त्याग दिया गया है।
   (ग) महंत व्यवस्था चरमरा कर मर गई है।
   (घ) दहेज व मृत्यु भोज दिन प्रतिदिन गम्भीर हो रहे हैं।
   उपरोक्त कमियों का कारण धनावंश द्वारा अपने आध्यात्मिक आचार व्यवहार से भटकना है। आध्यात्मिक रूप से सशक्त मानव उपरोक्त अवगुणों से दूर रहता है।
   सामाजिक रीतियों में निम्न सुधार अपेक्षित हैः–
   (क) धनावंशियों को योग द्वारा अपने शरीर को निरोग रखना।
   (ख) उपयुक्त शिक्षा ग्रहण करना।
   (ग) धनांवश के सामाजिक संगठनों द्वारा युवाओं को व्यवसाय/सरकारी नौकरी के लिए उपयुक्त जानकारी उपलब्ध करवाकर।
   (घ) व्यसन से दूर रहकर।
10. हां हमारा एक बड़ा श्रद्धा स्थल कायम होना चाहिए।
11. किसी भी समाज के सदस्यों को एकजुट रखने के लिए केन्द्रीय संस्था होनी ही चाहिए। इस संस्था की इकाईयां जिला स्तर/ तहसील स्तर/ ग्रम स्तर पर होनी चाहिए।

अंधेरा वहां नहीं है जहां तन गरीब है, अंधेरा वहां है जहां मन गरीब है।

पुखराज भाम्बू, राठील के विचार

* निसंदेह धन्ना वंश के पंथ प्रवर्तक श्री धना जी ही थे इसीलिए इस संप्रदाय का नाम धनावंश पडा। हमारे पूर्वज भक्त शिरोमणि श्री धना जी महाराज के अनुयाई बने और धना वंशी कहलाए। मेरा विचार है कि जो लोग धनावंश के पंथ प्रवर्तक धन्ना जी को नहीं मानते वे लोग किसी दुराग्रह से ग्रसित हैं।
* धनावंश एक धार्मिक समुदाय हैं और धनावंशीयों के व्यवहार में धार्मिकता झलकनी चाहिए । हमें अपने बच्चों को शुरू से ही सनातन संस्कार देने चाहिए क्योंकि बच्चे का मस्तिष्क गिली सीमेंट की तरह होता है जिसे हम अपनी इच्छानुसार शेप दे सकते हैं। एक बार आकार लेने के बाद उसमें बदलाव असंभव है। आज कल देखने को मिलता है कि जब कोई बच्चा अपनी माँ को परेशान करता है तो माँ उसको तुरंत मोबाइल थमा देती हैं और बच्चा उसमें व्यस्त हो जाता है इसकी बजाय बच्चे को धार्मिक प्रसंग सुनाने चाहिए ताकि बच्चे में सकारात्मक मनोवृत्ति विकसित हो। बच्चे को रोज़ सोने से पहले कोई धार्मिक कथा या भजन सुनाना चाहिए। संध्या आरती में बच्चों को शामिल करें। प्रत्येक धनावंशी को अपने घर में तुलसी का पौधा रखना चाहिए। गले में तुलसी काष्ठ की माला रखनी चाहिए। एकादशी का व्रत रखना चाहिए।
* धनावंश के उत्थान में सामाजिक संगठन बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं। सर्वप्रथम तो हमारे गुरुदेव धनाजी महाराज को जो स्थान मिलना चाहिए था वह अब तक नहीं मिला है इसलिए सामाजिक संगठन गुरुदेव धनाजी महाराज को उचित सम्मान दिलाने के लिए योगदान दे सकते हैं। जब तक हमारे सम्प्रदाय में पंथ प्रवर्तक के विषय में संशय रहेगा तब तक न तो हम एकजुट हो सकते हैं और ना ही प्रगति कर सकते हैं। अभी 17 जनवरी को धना जी की जयंती थी जिसे हम सब को उत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए था लेकिन बहुत कम लोगों ने इसे मनाया क्योंकि बहुत से लोग अभी तक अपने संप्रदाय के पंथ प्रवर्तक से अनजान है इसलिए सामाजिक संगठन धना जी का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करें जिससे कि हमारे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को हमारे पंथ प्रवर्तक के बारे में पता चले। हमारे समाज में मौजूद कुप्रथाओं का उन्मूलन करने के लिए भी सामाजिक संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । दहेज, मृत्यु भोज, अट्टा-सट्टा विवाह आदि हमारे समाज में विद्यमान वो कुरीतियां हैं जिनका उन्मूलन कोई अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता है । इसके लिए सामूहिक निर्णय की आवश्यकता होती हैं । इसके अलावा शिक्षा को बढ़ावा देने, समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति को सम्मानित करने, कमजोर लोगो की सहायता करने, सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित करने और हमारे महंत द्वारों को पुनर्जीवित करने का कार्य सामाजिक संगठन कर सकते हैं ।
* चौतरफा उन्नति का तात्पर्य है धनावंश का धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत होना। जब धनावंश का सर्वांगीण विकास होगा, प्रत्येक धन्नावंशी अपने आप पर गर्व करेगा, हमारे सम्प्रदाय को समाज में एक अलग पहचान मिलेगीऔर हमारे महंत द्वारों को जब खोया हुआ गौरव वापिस मिलेगा तो धनावंश की चौतरफा उन्नति होगी।
* निसंदेह,हमारी महंतीय व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान में महंत बनने की जो व्यवस्था है उसमें महंत अपने ही परिवार के किसी सदस्य को उत्तराधिकारी चुनता है चाहे वह अयोग्य ही हो इस व्यवस्था में समाज से कोई विचार-विमर्श नहीं किया जाता। मेरी निजी राय है कि महंत का चुनाव समाज के लोगो द्वारा गठित की गई कार्यकारिणी द्वारा किया जाना चाहिये। महंत बनने के लिए कुछ योग्यताएं तय की जानी चाहिए ।
* किसी भी समाज की सबसे बड़ी संपत्ति होती है उसकी युवा शक्ति। यदि युवा वर्ग अपनी शक्ति का सदुपयोग करें तो इस समाज की दशा और दिशा दोनों चेंज हो सकती है। युवाओं को कुसंगति से बचना चाहिए।आधुनिकता के चक्कर में हमारे संस्कारों को नहीं त्यागना चाहिए। नया सब कुछ ग्रहण करने योग्य नहीं है और पुराना सब कुछ त्यागने योग्य नहीं है। इसलिए आधुनिकता के नाम पर लोगों का अंधाधुंध अनुकरण नहीं करना चाहिए। युवाओं को नशे से बचना चाहिए क्योंकि नशा नाश का द्वार है। नशा करने वाला व्यक्ति अपना धन,शरीर और सामाजिक सम्मान तीनों को गंवाता है। आपको ऐसा कहने

ऊँचाई पर वो लोग पहुँचते है, जो बदला लेने की जगह बदलाव लाने की सोचते है।

वाले दोस्त बहुत मिल जायेंगे जो कहते हैं कि-जिंदगी एक बार मिलती हैं बार बार नहीं इसलिए हर चीज का मजा लो लेकिन क्या जिंदगी का मजा नशा करने और गुलछर्रे उड़ाने में ही है?

निश्चित रूप से, नहीं। जिंदगी का मजा तो गरीब लोगों के चेहरों पर खुशी लाने में, लोगों का दुख दर्द बांटने में, अपने माता पिता के सपनों को साकार करने में और स्वाध्याय करते हुए निरंतर प्रगति करने में है ।

* संस्कृत में एक श्लोक हैं-

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।

अधनस्य कुतो मित्र,अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥

अर्थात आलसी व्यक्ति को विद्या नहीं मिलती, बिना विद्या के धन नहीं मिलता, धन के बिना मित्र नहीं मिलते और बिना मित्र के सुख नहीं मिलता है। इसलिए आर्थिक उन्नति के लिए सबसे पहले शिक्षा आवश्यक है। यह आवश्यक नहीं कि आप सरकारी नौकरी ही लगो। शिक्षा आपकी हर क्षेत्र में मददगार होती है। अपने केरियर के लिए ऐसा क्षेत्र चुनना चाहिए जिसमें आपकी रुचि हो। अपने क्षेत्र में कठिन परिश्रम करो क्योंकि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। कोई अगर किसी बच्चे की पढ़ाई में रूचि नहीं है तो सरकारी नौकरी की रट लगा कर उसके पीछे पड़े रहना ठीक नहीं है। बेसिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उसको समय पर उसकी पसंद का कोई हुनर सिखाइए। अगर आपके पास पूंजी हैं और मार्केटिंग का ज्ञान है तो अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना सबसे बेहतर है। आज भारतीय बाजार पर विदेशी कम्पनियों का वर्चस्व बढता जा रहा है। हम टेक्नोलॉजी में पीछे है तो गूगल,एपल,फेसबुक, अमेजॉन,माइक्रोसाफ्ट जैसी कम्पनियां खड़ी नहीं कर सकते ये तो समझ में आता है परंतु जिस देश में पानी की प्याऊ लगाने की परंपरा रही हो, जिस देश में लोग बावड़िया और तालाब बनवाते थे उस देश में पानी का बाजारीकरण समझ से परे है। बड़ी-बड़ी विदेशी कंपनियां भारत में बोतलबंद पानी बेच रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि सब लोग नौकरी करके ही खुश है। संघर्ष कोई नहीं करना चाहता है। लोग दो वक्त की रोटी के लिए कभी न खत्म होने वाला संघर्ष करने के लिए तैयार है लेकिन खुद का व्यवसाय शुरू करके उसमें संघर्ष नहीं करना चाहते।

इसके अलावा विदेश जाकर भी अच्छी आमदनी कमायी जा सकती हैं। विदेश जाने से पहले यदि आपके पास कोई कार्य में दक्षता है और आप अंग्रेजी में संवाद कर सकते हो तो विदेश में भी काफी संभावनाऐ हैं ।

* धनावंश एक धार्मिक सम्प्रदाय है इसलिए प्रत्येक धनावंशी का आचरण संयमित और अनुशासित होना चाहिए। हमारे कुछ सामाजिक कायदे कानून निर्धारित होने चाहिए जिसका पालन करना प्रत्येक धनावंशी के लिए अनिवार्य हो । एक धनावंशी आचरण संहिता का निर्माण समाज के प्रबुद्ध जनों को मिलकर करना चाहिए।
* किसी भी समाज के रीति रिवाज और परंपराएं समाज की पहचान होती है। हमारे समाज में भी कई प्रकार की परम्पराएं विद्यमान हैं। किसी भी परम्परा और रीति रिवाज का निर्माण उस समय की परिस्थितियों और स्थान के आधार पर होता है। लेकिन आने वाली पीढियाँ उनका अंधानुकरण करने लग जाती है और वह परंपराएं विकृत रूप धारण कर लेती है और और वे परंपराएं कुप्रथा बनकर समाज में अभिशाप बन जाते हैं। ऐसी ही कुछ कुप्रथाऐ है- मृत्युभोज, दहेज और अट्टा सट्टा विवाह जिन पर रोक लगनी चाहिए। मृत्युभोज और दहेज को समाज द्वारा प्रतिबंधित किया जाना चाहिए और अट्टा सट्टा विवाह की कुप्रथा को समाप्त करने के लिए सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन करना चाहिए।
* हां,हमारे आदरणीय गुरुदेव श्री धनाजी महाराज का एक बड़ा धार्मिक स्थल कायम होना चाहिए। श्रद्धा स्थल के बिना हमारी कोई पहचान नहीं है। जिस प्रकार नाथ संप्रदाय, विश्नोई संप्रदाय और सिख संप्रदाय के मुख्य श्रद्धा स्थल है उसी तर्ज पर हमारा भी एक बड़ा श्रद्धा स्थल कायम करना चाहिए।
* हमारे समाज की एक नियामक केंद्रीय संस्था बननी चाहिए । केंद्रीय संस्था का निर्माण ऐसी जगह पर करना चाहिए जहां पर आवागमन की अच्छी सुविधा हो बिजली पानी की उचित व्यवस्था हो और जमीन का क्षेत्रफल भी 15 बीघा से अधिक हो। संस्था के परिसर में श्री धनाजी का एक भव्य मंदिर का निर्माण होना चाहिये। केन्द्रीय नियामक संस्थान के सामाजिक संगठन में सभी धनावंशी गाँवों का उचित प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

लगन छोटा सा शब्द है, पर जिसे लग जाती है, उसका जीवन ही बदल जाता है।

छगन स्वामी, पाली के विचार

- हाँ मैं और मेरा पूरा परिवार धनावंश के पंथ प्रवर्तक श्री धनाजी को मानते है और मेरा पूरा परिवार जीवनभर सच्चे धनावंशी रहेंगे व अपने हर आचरण में धनावंश की धार्मिक व आध्यात्मिक मर्यादा का ख्याल रखेंगे व उनका जीवन पर्यन्त पालन करेंगे।
- धनावंश समुदाय में और अधिक धार्मिक गतिविधियों का समावेश करने के लिए धनावंशी में समय-समय पर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन हो और उसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति को आमंत्रित किया जाये और श्री धनाजी जयंती इत्यादि मौकों पर सामाजिक स्तर पर बड़ा आयोजन किया जाये व उसमें बच्चों से भी प्रस्तुतिकरण कराया जाये ताकि उनमें बचपन से ही इन भावनाओं व समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हो सके।
- धनावंश के उत्थान में सामाजिक संगठनों द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है जैसे समाज में शैक्षिक स्तर को बढ़ावा देना, आर्थिक सहयोग, सामाजिक कुरीतियों को रोकने में भूमिका, महिला सशक्तिकरण और असहाय व उपेक्षित वर्गों की सहायता इत्यादि।
- धनावंशी समाज के चौतरफा विकास के लिए सभी धनावंशी बंधुओं को अच्छी सोच के साथ एक होकर आगे बढ़ना होगा, एकता से ही समाज का सकारात्मक उत्थान सम्भव है, समाज में सुस्कारित शिक्षा का ज्यादा से ज्यादा प्रचार प्रसार हो, समाज का हर युवा शिक्षित होने के साथ-साथ समाज के विकास में भी अपनी भूमिका का निर्वहन करे।
- हमारी महंतीय व्यवस्था में सुधार अत्यावश्यक है इसके लिए वंश परम्परा के स्थान पर श्रेष्ठतम व्यक्ति का चयन हो। महंत चयन के लिए कुछ योग्यताओं का होना आवश्यक है-जैसे उनका धार्मिक व आध्यात्मिक ज्ञान, भक्ति भावना, चरित्र इत्यादि।
- युवा पीढ़ी समाज की उन्नति का आधार स्तम्भ है। वर्तमान में जिस प्रकार आध्यात्मिक मूल्यों की अवहेलना हो रही है व जिस प्रकार युवा वर्ग में आत्महत्या, नशा, चारित्रिक पतन आदि देखने को मिल रहे है। ऐसे में धनावंशी युवाओं को संदेश है कि वे इन सबसे दूर रहे व अपने मूल्यवान आदर्शों को हमेशा अपने जीवन में अपनाये रखे, युवाओं को अपने जीवन में लक्ष्य बनाकर प्रयत्नशील बने रहना चाहिए।
- धनावंशी समाज की आर्थिक उन्नति के लिए धनावंशियों को निम्न प्रकार प्रयत्न करना होगा।

  अपने बच्चों के शिक्षा स्तर को बढ़ाना, अपने बच्चों को स्वरोजगार हेतु प्रेरित करना, धनावंशी समाज द्वारा सामाजिक स्तर पर ऐसी व्यवस्था हो जिसमें जरुरतमंदों को आगे बढ़ाने में उनका सहयोग किया जा सके।
- धार्मिक सम्प्रदाय होने के नाते धनावंश की नए सिरे से आध्यात्मिक आचरण संहिता हो, ताकि वर्तमान पीढ़ी व आने वाली पीढ़ी धनावंश परम्परा व उनके नियमों, आचरणों से अवगत हो सके।
- कुछ कुछ सामाजिक रितियों में सुधार किया जा सकता है लेकिन समाज की जन सहमति व सहयोग से ही उन्हें समाप्त किया जा सकता है। जैसे-अट्ठा-सट्ठा, दहेज प्रथा, मृत्युभोज इत्यादि।
- हा, हमारे धनावंशी समाज का एक बड़ा श्रद्धा स्थल कायम हो, जहां पर धनावंश से सम्बन्धित सभी जानकारी सुगमता से समाज को प्राप्त हो सके तथा जहां से आध्यात्मिक उन्नति के अवसर प्राप्त हो।
- समाज में गर्व की अनुभूति को जागृत रखने हेतु एक केन्द्रीय संस्था होनी चाहिए, जिससे समाज व उसकी संस्कृति का संरक्षण हो सके, जिसकी निम्न रूप रेखा हो-संगठन व पदाधिकारियों का चयन, युवाओं व महिलाओं को भी संस्था में भागीदारी, वृद्ध व अनुभवी व्यक्तियों को सम्माननीय पद, सामूहिक विवाह आयोजन व्यवस्था हो, विशेष अवसरों या वर्ष में एक बार स्नेह मिलन आयोजन हो।

दौलत सिर्फ इंसान के रहन-सहन का तरीका बदल सकती है बुद्धि, नीयत और तकदीर नहीं।

आपके पत्र-आपकी भावनाएं

श्री धनावंशी पत्रिका का तीसरा अंक मिला। कवर आकर्षक और सामग्री भी उपयोगी। सम्पादकीय मार्मिक है। हमारे महंतद्वारे बंद हो गए, वहां जो लिखित सामग्री थी, वह सुरक्षित रहनी चाहिए थी। हम सब अपने स्वार्थ में उलझे हुए हैं, कोई समाज को समय नहीं दे पा रहा है। सेवानिवृत्त महानुभावों को समाज के कामों में समय देना चाहिए।

इस अंक की परिचर्चा उपयोगी है। मृत्यु बैठक का दिखावा और ओढावणी त्वरित बंद की जानी चाहिए। यह पत्रिका नए-नए विषयों को उजागर कर रही है, यह धनावंशी समाज के लिए बहुत आवश्यक है।

-मांगीलाल स्वामी, नवा बास, सुजानगढ़

धनावंशी स्वामी समाज अपने खुद के गुरु और जाति इतिहास से अनजान क्यों रहना चाहता है, यह सवाल बार-बार मन में उठता है। जबकि दुनिया की हर कौम अपने इतिहास के प्रति सचेष्ट रहती है। दूसरे समाज अपना इतिहास लिखने-लिखाने के प्रयास में लगे रहते हैं, वहीं धनावंश इससे दूर भागता है। आखिर वजह क्या है? अगर हमारा इतिहास नहीं लिखा गया तो हम अपनी आनेवाली पीढ़ी को क्या बताएंगे? अगर धनावंश धार्मिक सम्प्रदाय है तो कुछ न कुछ तो कालान्तर में घटित हुआ होगा? यह सम्प्रदाय अपनी जड़ों से कटकर क्यूं रहना चाहता है-

-रघुवीर आनन्द स्वामी, गोता, अहमदाबाद

मेरा यह मानना है कि हमारे समाज के हर व्यक्ति को यह पता होना चाहिए कि हमारी उत्पत्ति कहां से हुई है? किसलिए हुई है? हमारा क्या कर्त्तव्य है? हमें क्या करना चाहिए और हम कर क्या रहे है? जहां से हमारे गुरु महाराज का जन्म हुआ है, वहां पर हमारे समाज का तीर्थ स्थान होना चाहिए, सबको वहां जाना चाहिए, तभी कुछ हो सकता है।

-भागीरथ स्वामी, हिम्मटसर

श्री धनावंशी हित पत्रिका का तीसरा अंक प्राप्त हुआ, इसमें अध्यात्म और पंथ की सची बातें है। धनाजी की 605 जयंती अनेक जगह मनाई गई, सबका हृदय से अभार। धनावंशी भक्ति के 35 अंगों की व्याख्या पढ़कर बहुत अच्छा लगा। दूसरे सभी बंधुओं के लेख भी प्रेरणादायी है। मैं सम्पूर्ण धनावंशी समाज से आग्रह करता हूँ कि यह पत्रिका धनावंश के घर-घर पहुंचाए। समाज के विकास में इस पत्रिका का योगदान निर्विवाद है।

-घनश्यामदास स्वामी, चतरदासजी मंदिर, श्रीडूंगरगढ़

श्री धनावंशी हित पत्रिका आज मिल गई। पढ़कर प्रसन्नता हुई। जब तक इसे पढ़ नहीं लेते, तब तक थोड़ी बेचैनी रहती है। हमारे समाज की पूरी खुराक इसमें मिलती है। यह हमारे समाज की अनिवार्य चीज है।

-बस्तीराम गौरा, मेड़ता सिटी

अहंकार वह दौड़ है, जहाँ अक्सर जीतने वाला हार जाता है।

श्री धनावंशी हित पत्रिका धनावंशी स्वामी समाज के लिए बड़ा महत्त्व रखती है। यह हमारे समाज का अभिन्न अंग है। इसके सम्पादन से जुड़े सभी बंधुओं का आभार। यह पत्रिका हमारे जीवन में अच्छे बदलाव ला सकती है। हमारे जीवन पर एक अच्छी छाप छोड़ सकती है। यह पत्रिका हमारी आंखें खोलने का कार्य कर रही है। इसका लाभ उठाना चाहिए

-छगन स्वामी, पाली मारवाड़

पत्रिका का तीसरा अंक पढ़कर बहुत अच्छा लगा। जिस तरह से आपने सम्पादकीय में अपने विचार रखे हैं, वे प्रेरणीय हैं। पत्रिका की सारी सामग्री धनावंश समाज के लिए बहुत उपयोगी है। आपका मार्गदर्शन पत्रिका के माध्यम से सभी बंधुओं को मिलता रहे, यही कामना

-भंवरलाल वैष्णव, जवपुर

हमारे समाज की नव प्रतिभाएँ

धन्नावंशी स्वामियों में बेटों से बेटियां भी कम नहीं है इस वर्ष 5 बेटियों ने सरकारी मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की डिग्री अर्जित कर यह साबित कर दिया है-

1. डॉ सरिता स्वामी पुत्री श्री पूरन जी स्वामी बामलास, गुढा गौड़जी झुंझुनूं।
2. डॉ लक्ष्मी वैष्णव पुत्री श्री प्रेमसुख दास जी खेड़ा हीरावास नागौर। हाल बम्बई
3. डॉ मनीषा वैष्णव पुत्री श्री प्रेम दास वैष्णव बूचकला जोधपुर
4. डॉ सिमरन वैष्णव पुत्री श्री सत्यनारायण वैष्णव ग्राम रास जिला पाली।
5. डॉ मोनिका स्वामी पुत्री बंकटलाल, सूरतगढ

बेटों में

1. महेंद्र भाकल पुत्र श्री मांगीलाल भाकल,खेड़ा हीरावास जिला नागौर।

विगत दिनों एलडीसी (कनिष्ठ लिपिक) भर्ती में निम्न धनावंशी बहन-भाई चयनित हुए, सबको श्री धनावंशी हित पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

चयनित विद्यार्थियों में राधेश्याम पुत्र श्री लालदास सींवर गांव गडरिया तहसील जायल, सुरेश पुत्र हुकमदास मूण्ड गांव कल्याणसर तहसील-बीदासर, लक्ष्मी वैष्णव पुत्री रामदयाल गोलिया गांव मंगेरा जिला जोधपुर, सुरेश जाझड़ा पुत्र प्रहलाददास जाझड़ा गांव चांतरा मांजरा जिला नागौर, गजानन्द पुत्र राजेन्द्रप्रसाद स्वामी गांव छपारा तहसील लाडनूं, सपना पुत्री गिरीराज स्वामी गांव बाड़ी जिला झुंझुनू, संगीता पुत्री पुरुषोत्तम स्वामी गांव भादवाळी जिला सीकर, प्रभुदास पुत्र रामकरणदास कड़वासरा गांव नाथवाणा तहसील लूणकरणसर, कानाराम स्वामी पुत्र जगदीशदास स्वामी दौलतपुरा, तहसील सवाई माधोपुर है।

द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती में पास होने पर बधाई

किशनदास पुत्र सत्यनारायण स्वामी गांव हालासर तहसील सरदारशहर (संस्कृत), गोविन्द स्वामी पुत्र बस्तीराम स्वामी गांव मेड़ता सिटी जिला-नागौर (विज्ञान) को चयन पर बधाई।

दूरियों का गम नहीं अगर फासले दिल में ना हो,
नजदीकियां बेकार है अगर जगह दिल में ना हो।

श्री धनावंश हित में विज्ञापन सहयोग करने वाले धनावंशी बंधु

1. श्री रामचंद्र स्वामी, स्वामियों की ढाणी
2. श्री रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद
3. श्री सुखदेव स्वामी, अहमदाबाद
4. श्री लक्ष्मणप्रसाद स्वामी, पलसाना
5. श्री पदमदास स्वामी, बीदासर
6. श्री गोपालदास स्वामी, पालास
7. श्री गोविन्द स्वामी, हैदराबाद
8. श्री श्रवणकुमार बुगालिया, दिल्ली
9. श्री भागीरथ बुगालिया, दिल्ली
10. श्री गोपालदास महावीर स्वामी, थावरिया
11. श्री बृजदास स्वामी पुत्र श्री सीतारामदास परिव्राजक, सूरत
12. श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली
13. डॉ. घनश्यामदास, नोखा
14. श्री मनोहर स्वामी, अजीतगढ़
15. श्री गुलाबदास स्वामी, जोधपुर
16. श्री बनवारी स्वामी, स्वामियों की ढाणी
17. श्री त्रिलोक वैष्णव, जोधपुर

उपरोक्त सभी धनावंशी बंधुओं का आभार। अन्य जनों से भी निवेदन है कि इस पत्रिका के सुचारु प्रकाशन हेतु अपना विज्ञापन सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।–प्रकाशक

पत्रिका के विशिष्ट सहयोगी

सांवरमल स्वामी, आबसर
अर्जुनदास स्वामी, हरियासर
देवदत्त स्वामी, सूरत
लालचन्द स्वामी, धोलिया
बजरंगलाल स्वामी, लालगढ़
प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

श्री धनावंशी हित

यह पत्रिका धनावंशी समाज की एकमात्र पत्रिका है। कृपया इसके प्रचार–प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें।

- पत्रिका में विज्ञापन, बधाई संदेश, सूचना, समाचार तथा रचनाएं भिजवाकर अनुगृहीत करें।
- यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी राय से अवगत करवायें।
- पत्रिका का सालाना शुल्क 200/– रुपये है। कृपया सदस्य बने।
- **पता–श्री धनावंशी हित, धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़–331803 (बीकानेर) ⁎ मो.: 9461037562**

प्रिय धनावंशी बंधुओं

स्त्री वर्ग हमारे समाज का आधा हिस्सा है । आप देखेंगे जैन समाज में बने महिला मंडलों की गतिविधियां पुरूष मंडलों से किसी मायने में कम नहीं होती । प्रतिदिन की धार्मिक गतिविधियों में भी माताएं–बहनें आगे होती है । धार्मिक–सामाजिक कार्यों की जो जिम्मेदारी नारी वर्ग को दी जाती उसे वे सिंशियोरिटी से निभाती हैं । पढी लिखी बहनों के साथ कुछ कम पढी लिखी बहनें भी कार्य कर सकती हैं । धनावंशी बहनों के लिए बहुत से कार्य हैं,पर उनका जरा सा भी संगठन नहीं है । हमारी बहनें एक दूसरी को जानती नहीं हैं । पुरूषों में तो द्वेष भाव अधिक होता है,बेवजह एक दूसरे की टांग खिंचाई करते हैं और अपने अभिमान के कारण सच्ची बात को स्वीकार करने में हजार तर्क कुतर्क लगाते हैं । पर,बहनें सच्चाई को सहज मन से स्वीकार कर लेती हैं । डॉ उमेश को चाहिए कि विचारवान बहनों का पहले एक व्हाटसप ग्रुप बनाए,फिर संस्था बनाने की ओर अग्रसर हों

अभी श्री धनावंशी हित पत्रिका का अगला अंक--धनावंशी नारी विशेषांक के रूप में निकालना चाहते हैं,जिसमें सारे लेख हमारी बहनों के लिखे हुए होने चाहिए । उनके विचार हमें जानने चाहिए । हमें उन्हें लिखने–पढने का हौसला देना चाहिए ।

●●●●●

सदस्यता शुल्क एवं अन्य भुगतान निम्न खाते में करें।

Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

**जिन्दगी की मुश्किलों को अपनो के बीच रख दो,
या तो अपने रहेंगे या फिर मुश्किलें।**

Regd. No. BKN/07/063/2017

LAXMI

MULTI SPECIALITY HOSPITAL

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित पूर्णतया एसी अस्पताल

- जनरल फिजिशियन
- स्त्री रोग विशेषज्ञ
- यूरोलोजिस्ट परामर्श
- अस्थि रोग विशेषज्ञ
- एनस्थिसिया सुविधा
- होम्योपेथिक सुविधा
- अत्याधुनिक मशीनों द्वारा सभी प्रकार की जाँचे।

सुविधाएं

- सोनोग्राफी
- एसी लेबोरेटरी
- डिजिटल एक्स-रे की सुविधा
- वातानुकुलित वार्ड व कॉटेज
- एम्बुलेंस की सुविधा
- मेडिकल स्टोर
- कैन्टीन
- जनरेटर सुविधा

डॉ. घनश्यामदास स्वामी
MBBS MD (MEDICINE)

डॉ. हरिराम पेड़ीवाल
MBBS MS (SURGERY)

डॉ. नवीन स्वामी
BDS (DENTAL SURGERY)

डॉ. भरत ओझा
MBBS

डॉ. बी.एल. स्वामी
MD, DM (CARDIOLOGY)

डॉ. पी. आर. दैया
BHMS

मेजर एवं माइनर ऑपरेशन थियेटर

Peepli Chowk, NOKHA-334803 (Bikaner)
Ph. : 01531-222100, Mob.: 9119253153 laxmimsph@gmail.com

धनावंशी स्वामी समाज के लिए हार्दिक शुभकामनाएं

रामचन्द्र स्वामी
स्वामियों की ढाणी, बीदासर

Mobile : 9811685994
9873345994

LTF

LIFE TIME FASHION

Mfs. & Suppliers of : **Jeans & Cottont Pant**

IX/6398, Mukherjee Gali No. 2, Gandhi Nagar,
Delhi - 110031 Phone : 011-22075994

If Undelivered Return To
सम्पादक : श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन
कालू बास, पोस्ट : श्रीडूंगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राज.) मो.: **9461037562**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक चेतन स्वामी द्वारा धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मुद्रित ।